आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 07 | उदयपुर सोमवार 15 अप्रेल 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

पहलीबार हवेली के बाहर हवेली संगीत की प्रभावना

भारत की ध्रुवपद-धमार गायकी सर्वाधिक प्राचीन है। इस गायकी के अनेक धुरंधर विद्वान गायक हमारे देश में हुए हैं जो राष्ट्रीय एवं सार्वजनिक सम्मान एवं अलंकरणों से सम्मानित भी किये गए हैं। इसी शैली की विशिष्ट गायकी 'हवेली संगीत' के नाम से प्रख्यात है। यह गायकी अब तक उपेक्षित सी रही है। यह प्रचलित एवं पारम्परिक ध्रुवपद-धमार गायकी से कई अर्थों में अपना वैशिष्ट्य रखती है। इस शैली के गायक पुष्टिमार्गीय वैष्णव-परम्परा में आते हैं।

नाथद्वारा के श्रीनाथजी, कांकरोली के द्वारिकाधीशजी तथा किशनगढ़ के वैष्णव मन्दिरों में इस गायकी की परम्परा विकसित एवं पल्लवित हुई है। इसके गायक वंश परम्परा में इस गायकी के उपासक माने जाते हैं। भगवान वल्लभाचार्य के समय में ही इन गायकों को इन मन्दिरों में संरक्षण प्राप्त हुआ। इन्हें ध्रुवपद-धमार की पुष्टिमार्गीय विशिष्ट परम्परा को अपनी विशिष्ट शैली में गाने की मर्यादा में रहना पड़ता है। ये विशिष्ट गायक 'कीर्तनिये' कहलाते हैं जो कीर्तनकारों की विशिष्ट शैली में मन्दिरों में भगवत्-चरणों में इन पदों को अत्यन्त भक्ति-भाव से गाने में लीन रहते हैं। पारिश्रमिक के रूप में केवल इन्हें भगवान का प्रसाद ही प्राप्त होता है जिससे इनके समस्त परिवार का भरण-पोषण होता आया है। मन्दिरों के बाहर ये आज तक नहीं आए और न इन्हें किन्हीं अन्य विशिष्ट समारोहों में गाने की इजाजत ही मिली।

गहन अध्ययन के उपरान्त यह ज्ञात हुआ है कि ये गायक अपनी नौकरी समझकर भगवान के समक्ष नहीं गाते। परम भक्ति-भाव से अपनी कला का प्रदर्शन करना ही इनका मुख्य प्रयोजन रहा है। भारतवर्ष के अनेक कलामर्मज्ञों तथा संगीत-संस्थानों ने इस गायकी का अध्ययन एवं रिकॉर्ड कराने का प्रयास किया परन्तु वे इस काम में सफल नहीं हो सके। ये गायक कभी भी इस बात के लिए तैयार नहीं हुए कि उनकी कला का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाए। उन्हें कभी अपने प्रचार प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान की भी चिन्ता नहीं रही। भगवान के विशिष्ट दर्शनों के समय उन्हें जगाने, सुलाने, खिलाने, पिलाने एवं गोपियों के संग राग-रंग में तल्लीन होने के अवसरों पर ही ये गायक विविध रागों में उपयुक्त पद गाते-बजाते हुए तल्लीन हो जाते हैं।

जिन रागिनियों और तालों का ये प्रयोग करते हैं, वे उद्‌भुत एवं अवर्णनीय हैं। इस गायकी में जहां स्वर एवं ताल-चयन का वैचित्र्य मिलता है, वहां शब्दों का लालित्य भी किसी प्रकार कम नहीं है। कीर्तनिये अन्य ध्रुवपद-धमार गायकों की भांति गायकी के तंत्र से बोझिल नहीं होते। ये तो अपने पदों को सहज भक्तिमूलक, भावात्मक और भावनात्मक ढंग से गाकर रसविभोर हो उठते हैं। ये कलाकार कुमावत जाति के हैं। मिट्‌टी के बर्तन बनाने वाले और खेतों में काम करने वाले ये साधारण व्यक्ति कीर्तन-गायकी की ओर किस प्रकार प्रवृत्त हुए, संगीत के शोधार्थियों के लिए यह अनुसंधान का विषय है।

राजस्थान के कई अन्य कुमावत भी इसी प्रकार के कला-व्यवसाय में निरत हैं। इनमें से कई कलाकार ब्रज की रास-मण्डलियों में वाद्य बजाते रहे। ब्रज के रासधारी विशिष्ट स्वरूपों का काम ब्राह्मण कुल के बालकों के अतिरिक्त इन कुमावतों को देना धर्म-विरूद्ध समझते थे। आज से कोई दो सौ वर्ष पूर्व इन कुमावत कलाकारों में जबर्दस्त आंदोलन चला और उन्होंने इन रासधारियों के विरूद्ध विद्रोह कर दिया तथा उन्हें छोड़कर अपनी स्वतंत्र रास-मण्डलियां स्थापित कर दीं।

फुलेरा के रोइड़ो नामक गांव में कभी इनकी रास-मण्डलियां विद्यमान थीं। यही नहीं, राजस्थान की अन्य लोकनाट्य विधाओं में भी इन कुमावतों का प्रमुख हाथ रहा। कई अच्छे गायक, वादक एवं नर्तक हुए हैं। नाथद्वारा के श्री पुरुषोत्तम दास पखावजी देश के सर्वोच्च पखावजी माने गए। ऐसी मान्यता है कि कुमावतों को इस कला-प्रदर्शन का वरदान भगवान वल्लभाचार्य से ही प्राप्त हुआ था। ये कुमावत ढोलक, मृदंग आदि के खोल बनाते समय स्वयं उनके वादन में रूचि लेने लग गए। गायन की परम्परा के पीछे भी यही दलील सुनने को मिलती है।

राजस्थान संगीत नाटक अकादमी की जोधपुर में हुई एक बैठक में यह विचारणा बनी कि लोक-संगीत के अध्ययन, सर्वेक्षण के साथ-साथ हवेली संगीत के संरक्षण की ओर भी हमारा ध्यान जाना चाहिए। इस बैठक में मैं भी राज्य सरकार द्वारा मनोनीत एक सदस्य था। यह कार्य भारतीय लोककला मण्डल को दिया गया। देवीलाल सामर लोककला मण्डल के संस्थापक थे किन्तु वे अकादमी के भी अध्यक्ष थे। उनके विशेष प्रयत्नों पहली बार मैं और अकादमी के कार्यकर्त्ता नाथद्वारा पहुंचे और हवेली संगीत के कलाकारों से भेंट की गई।

उन्हें यह भलीप्रकार समझाया गया कि अकादमी कोई व्यावसायिक संस्थान नहीं है। वह भी मन्दिर के समान ही धार्मित कर्तव्य में जुटी हुई है। आपके पास वर्षों से संचित जो अमूल्य कीर्तन-सम्पदा है, यदि समय रहते उसका संरक्षण नहीं किया गया तो हम उससे वंचित हो जायेंगे। वहां भगवान श्रीनाथजी की अनुकम्पा से हम लोग 25 घण्टों का वृहद रेकॉर्डिंग करने में समर्थ हुए।

इसके साथ ही यह सुयोग बना कि 26 मार्च 1972 को हवेली संगीत के इन सभी विशिष्ट कीर्तनियों को भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर के रंगमंच पर आमंत्रित किया गया और विशिष्ट जन-समुदाय के समक्ष उनका कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। उनके जीवन में यह पहला अवसर था जबकि मन्दिर की देहरी से बाहर जनता-जनार्दन के समक्ष उनकी कला प्रकाश में आई।

लेकिन इस प्रदर्शन से नाथद्वारा के वैष्णव सम्प्रदाय में बड़ी खलबली मच गई। कई कट्‌टर धर्मावलम्बियों ने नाथद्वारा के गोस्वामीजी महाराज को शिकायत के तार भेजे। इस समारोह में ध्रुपद गायकों में सर्वश्री रामदास, अमृतलाल, मन्नालाल, ब्रजलाल, पन्नालाल, तोलाराम तथा श्यामसुन्दर थे। मृदंग वादक मूलचन्द एवं श्यामलाल थे। सम्मान में सभी कलाकारों को पत्रं-पुष्पं के रूप में धनराशि, उपरणा और सम्मानपत्र प्रदान किया गया।

इन कलाकारों ने जहां अपना मूक आभार प्रदर्शित कर यह अनुभव किया कि आज का दिन उनके लिए स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है वहीं दर्शकगण इतने भावुक और भक्तिमय हुए कि उनसे कुछ भी कहते नहीं बना। श्रोता-प्रस्तोता सभी धन्य हुए और जिस निष्ठा से आये उसी निष्ठा के साथ श्रीनाथजी के चरण-शरण की अनुभूति लिए विदा हुए।

हवेली संगीत के स्थापित सारंगी वादक अमृतलाल कुमावत ने बताया कि हवेली संगीत में अष्टछाप के भक्तकवि सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, कुंभनदास, चतुर्भुजदास, नन्ददास, गोविन्द स्वामी और छीतस्वामी; ये आठों कवि अष्टछाप के कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके पदों का कीर्तन करने के कारण ये गायक कीर्तनिये कहलाते हैं।

श्रीनाथजी मन्दिर में प्रत्येक वार-त्यौहार, तिथि तथा पर्वादि के पूजानुष्ठान निर्धारित हैं। मंगला से आरती और शयन के दर्शनों तक जिस प्रकार शृंगार स्वरूप निर्धारित है उसी तरह संगीत विधान भी निश्चित है। श्रीनाथजी के दरबार में गायन योग्य करीब दस हजार पद हैं जिनकी अलग-अलग राग-रागिनी, ताल, सुर, सरगम और वाद्य-वादन विधि हैं। इन पदों में अष्ट सखाओं के साथ ही तानसेन, हरिदास, हरिराय, गोसाई विट्‌ठलनाथ, पद्‌मनाथ दास, तुलसीदास, धीवर कटहरिया, आसकर्णराज, धोदी मुसलमान और जात बीबी के पद भी शामिल हैं।

अपने को ब्रज मण्डल के गांठोली गांव से नवनीत प्रियाजी के स्वरूप के साथ मेवाड़ आने वाले परिवार का सदस्य बताने वाले अमृतलाल हवेली संगीत को लोकसंगीत नहीं मानते। वे कहते हैं कि यह भगवद् लीलाओं का शास्त्रीय गायन है। तल्लीनता ही संगीत का नाम है। गाते-गाते कई बार तो हमें अपने अस्तित्व का ही भान नहीं रहता। हमारे लिए तब केवल 'त्वमेव सर्वं मम देव-देवा' रह जाता है। अमृतलाल बताते हैं कि अन्यों की तरह वे भी प्रतिदिन चार बजे उठकर सारंगी पर कण्ठ-संगीत का रियाज करते हैं। श्रीनाथजी के मन्दिर के सभी दर्शनों में संकीर्तन हेतु जाते हैं। वे मानते हैं कि आज इस संगीत परम्परा को अपेक्षित प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है।

कीर्तनकार श्यामसुन्दर ने नाथद्वारा में 20 फरवरी 1992 को अपने निवास पर एक भेंट में बताया कि भक्त और भगवान में भक्त सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भक्ति और भगवान जगाने पड़ते हैं। जैसे बन्द दुकान खोलनी, मांडनी, सजानी तथा साफ-सुथरी करनी पड़ती है, अगरबत्ती लगानी पड़ती है वैसे ही भक्ति जगानी पड़ती है। इसे जगाने के लिए वाद्य-वादन का स्वर बुलन्द करना पड़ता है। राग-रागनियों में गाना होता है। जोर-जोर का हेला देना पड़ता है। जब भक्ति जागृत होती है तब भगवान का जागरण होता है।

उन्होंने बताया कि वैष्णव मन्दिर 'हवेली' नाम से जाने जाते हैं। वहां भगवान हवेली में विराजमान रहते हैं। कीर्तन करने वालों का अपना घराना है। उसी घराने में स्वत: ही उनकी सांगीतिक शिक्षा-दीक्षा होती है जैसे चिड़ियां के साथ रहकर उसका बच्चा खाने-पीने से लेकर उड़ने तक के संस्कार पा लेता है।

श्यामसुन्दरजी के पिता रामदास ध्रुपद धमार के साथ लखनऊ घराने की ठुमरी के भी निष्णात थे। उनका तबला, मृदंग, वीणा, वायलीन, जलतरंग आदि कई वाद्यों पर समान अधिकार था। रामदासजी के पिताजी मथुरादासजी पर वृन्दावन के ग्वालियर बाबा की विशेष कृपा रही। बम्बई के मशहूर गायक भाई शंकर, लखनऊ के हारमोनियम वादक मास्टर श्यामदास का पूरा सान्निध्य मिला वहीं नाथद्वारा के करेला ब्रज निवासी टीकमदास, सूरदास तथा हीरालाल पालीवाल से भी बहुत कुछ सीखने को मिला।

उल्लेखनीय पक्ष यह भी है कि हवेली संगीत और वहां के कीर्तनकारों पर उन्हीं दिनों मैंने हाथरस से प्रकाशित पाक्षिक संगीत, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के त्रैमासिक रंगयोग तथा उदयपुर के दैनिक जय राजस्थान में अपने चलते-चलते नामक साप्ताहिक स्तंभ में लिखा। **- म. भा.**

डॉ. भानावत के नए प्रकाशन

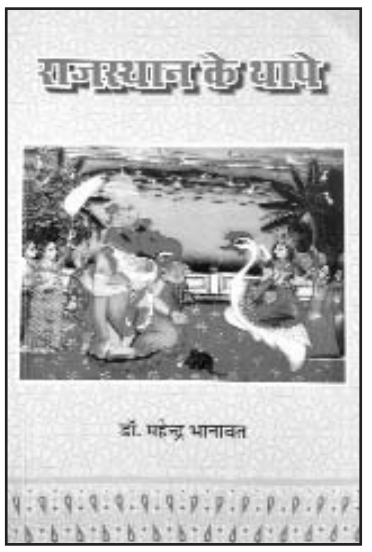

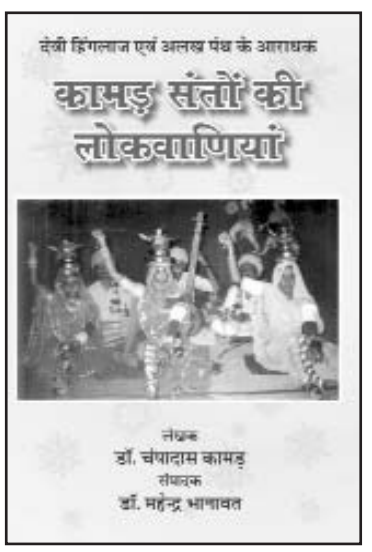

लोकरंग मांय महावीर सामी री पड़त

राजस्थानी लोकरंगां मांय जैनियां रा चौवीसमां तीरथंकर भगवान महावीर सामी री ओळखाण केई रूपां मांय मिलै। महावीर सगळा मिनखां नै मिनखाचारो राखण रो उपदेश दीधौ। वी कदीई जातपांत स्यूं नीं बंध्या, ना कीनेई आपणे खूंटे बांध्या। आपणी आतमा नै उजास देवण खातर वी साधना मांय रिया अर परमातमा बण्या। परम ततव पायो। सत्य अहिंसा अपरिग्रह जेड़ा वांरा सिद्धांत सरबभौम है। सरब काल शाश्वत है।

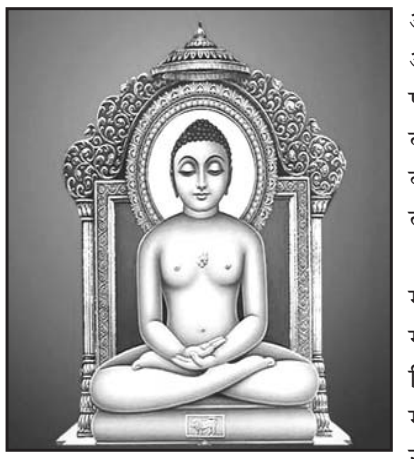

लाखां-करोड़ां बरस बीत्यां पछै भी कोई नीं केवेळो कै सांच बोळणो पाप है। हिंसा करणो धरम है अर परिग्रह सूं भाईचारो पनपै। गाम-गाम, घर-घर अर घाट-घाट रा मिनख म्हावीर नै मानता हा।

अस्यो समै भी आयो जदी लोगबाग वांरा वचन अंतस मांय नीं उतार्‌या अर वांरै नाम स्यूं केई अड़ंगा कर दीधा। ईसूं महावीर वणज होयग्यो। दुकान होयग्यो। धंधो अर व्यवसाय होयग्यो। महावीर रा भगत वांरी संगत रो तेज दैवण री बजाय वांरौ रगत ई घणो रळियायो।

महावीर जेड़ा परमातम पुरस महावीर ई व्हियां करै। वांरी ममता अर समता रो दूजो कोई उदारण नीं मिलै। शरीर कींरोई वो, वींसूं लोई ही निकलै़। पण महावीर री ममता लोई री जइगां दूधड़ला री धार दीधी। वा भी दुसमण नै।

सांप नै। ज्हैर नै। देवता समंदर रो मंथण कर अमरत काढ़ियौ। अठै महावीर आपणां आखा शरीर मांय अमरत ई ढालि़यो। ज्हैर री छायां गात वांनै नीं लागी। मावड़ आपणी ममता उड़ैले आपणा बालक्या माथै तो आपणै बोबास्यूं दूधड़ला पावै। महावीर तो मनस्यूं, वाणीस्यूं अर आपणी करणीस्यूं दूधड़लो़ई दूधड़लो़ दीधौ।

लोकजीवण मांय महावीर सूं जुड़ियोड़ा केई गीत, भजन, तवन, सिलोका, सपना मिलै। ई मांय लोक री आपरी संस्कृति, रागरंग, वैभव अर वड़द रा पड़वा फूट्या दीखै। महावीर रै बालपणा नै वारै पालणिया गीत मांय किण ठाठस्यूं गाया। महावीर रै मखमल रो आंगो, हीरा मोत्यां सूं जड़ियोड़ी टोपी, जरी रो रूमाल।

पालणा रै कड़ियांवाली सोना री सांकळ, रेशम री डोर, रतनां रो जड़ाव, पगां मांय खनखनाता झांझरिया, ठमक-ठमक चाल। केई सपनां कलपनां मांय मावड़ त्रिशला झूलावै। कड़ावा है-

पालणियो परवस पड़ियो
रतना रो रूड़ो जड़ियो
तर सोना री सांकळ कड़ियां
ओ म्हावीर परभु झूलो पालणिये झूलो।
कोई तार-तार तणिया
रेशम डोर बणिया
कुण कारीगर इने घड़ियो
ओ म्हावीर परभु झूलो पालणिये झूलो।
कोई पावां पायल बाजै
झंझरिया रूड़ा गाजै
परभु चालै चतराई सूं ठमकै
ओ म्हावीर परभु झूलो पालणिये झूलो।
पालणियो जो कोई गावै
सदाई सुख पावै
कोई मुगत्यां रा फल पावै
ओ म्हावीर परभु झूलो पालणिये झूलो।

ई गीत माथै केई ठौड़ इसकूलां मांय टाबरटोली स्यूं निरत रा दरसावण दिया जावै। उदैपुर रो जग जाण्यो लोककला मण्डल तो म्हावीर रै जीवण माथै कठपुतल्यां री नाटिका ई बणाई अर केई देशां मांय बताई। वैशाली रो अभिषेक नाम स्यूं दस्ताना छड़ अर धागा शैली मांय ब्लेक थियेटर री विदेशी टेकनीक स्यूं ई नाटिका रो संयोजण महावीर रै लोकोपकारी रूप नैं प्रगटाय केई चमतकार पैदा कीधा। मावड़ त्रिशला रा सौला सपनां अर महावीर रै जलमस्यूं इन्दर रौ सिंघासण डोलण रा दरसाव एक नुवी दनियां मांय पोंचावै।

एक दूजी पड़त पड़ शैली मांय महावीर री जीवणी नै भीलवाड़ा रा कला साधक निहाल अजमेरा कीधी। ज्यूं लोकदेवता पाबूजी अर देवजी री पड़ां भोपा-भोपी गाम-गाम बांचै त्यूंई वीं शैली मांय चितेरा कनूं महावीर री जीवणी नै चितरावण करा भोपा-भोपण बण वींरौ दरसावो कीधौ। नतीजो यो हुयो कै केई भगत आपणीं हवेल्यां मांय महावीर री पड़ टांगी अर वांरी लीला नै जग जाणी करी। निहालजी रा कलाकार आज भी महावीर री पड़ बांचै अर लोगां मांय वांरी बातां रो परभाव दै।

नेता-नेताइन में गरमाहट का मसाला

-हरमन चौहान-

''आप जब मंत्री थे तब देश में मंहगाई बढ़ी। भ्रष्टाचार बढ़ा। महिलाओं पर अत्याचार बढ़े। यह आपको पता है? क्योंजी, आप जब हारते थे, मेरी नाक नहीं कटती थी। राबड़ी देवी को कौन जानता था? वह जीत सकती है तो मैं भी जीत कर बता सकती हूं।''

नेताजी दिल्ली गए चुनाव का टिकिट लेने। वहां उन्हें पार्टी से टिकिट नहीं मिला। उनका निराश होना लाजिमी था। हताश घर लौटे। उनका लटका मुंह देखकर नेताइन बोली- 'क्योंजी, आप कहकर तो एक दिन के लिए गए थे और दिल्ली जाकर क्या धरने पर बैठ गए थे हफ्ते भर?'

नेताजी ने ठण्डी सांस लेकर कहा- 'भागवान! तुझे जब पता ही नहीं है, इस देश में क्या हो रहा है तो बेकार माथा मत खाया करो। चुप ही रहो तो ठीक है।'

नेताइन बिफरी- 'देश का ठेका आपने ही ले रखा है। आप जब मंत्री थे तब देश में मंहगाई बढ़ी। भ्रष्टाचार बढ़ा। महिलाओं पर अत्याचार बढ़े। यह आपको पता है?'

नेता ने माथा ठोक कर कहा- 'ओफ हो, अब ये बेकार की बातें लेकर कहां बैठ गई। आम चुनाव सिर पर है। मुझे टिकिट की पड़ी है और तू बेकार की भेजामारी कर रही है। परेशान होकर आया हूं। थोड़ा चैन से बैठने तो दो।'

नेताइन ने कहा- 'इस बार आप चैन से ही बैठो। मैं चुनाव लड़ूं तो कैसा रहेगा जी?'

नेताजी ने कहा- 'चुनाव लड़ना हंसी-खेल नहीं है। तुम्हें कोई जानता ही नहीं है तो वोट कौन देगा। हार कर मेरी नाक कटवाओगी।'

वह बोली- 'क्योंजी, आप जब हारते थे, मेरी नाक नहीं कटती थी। राबड़ी देवी को कौन जानता था? वह जीत सकती है तो मैं भी जीत कर बता सकती हूं।'

नेता ने कहा- 'उसका मुकाबला तुम क्या करोगी। वह कहां और तुम कहां?'

नेताइन बोली- 'एक बार आप जेल जाकर बताओ तो पीछे मैं कैसे संभाल सकती हूं राजपाट, मैं भी बता सकती हूं। बताओ, मैं किस पार्टी से खड़ी होऊं?'

नेता ने कहा- अब चुप भी कर।

नेताइन बोली- 'क्यों चुप करूं? आप संसद में चिल्ला सकते हो तो क्या मैं घर में नहीं चिल्ला सकती? संगमा की बात किसी ने मानी? आखिर संसद भंग करवा कर ही रहे, पर चुप नहीं रहे। चुनाव में खड़े होकर देखलो, इसबार मैं आपके सामने खड़ी होऊंगी। आप जीतो या मैं जीतूं, क्या फर्क पड़ता है। अपने पास करोड़ों की सम्पत्ति है। सी.बी.आई जांच नहीं कर पायेगी और आप पर भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच भी नहीं होगी। आप पर मुकदमा भी नहीं चलेगा और आप जेल भी नहीं जाएंगे। मैं अपनी सारी सम्पत्ति की घोषणा कर दूंगी कि.....।'

नेता ने झल्ला कर कहा- 'चुप कर।'

उपनिषदों की पंडिता डॉ. वेदवती का निधन

उपनिषदों की विख्यात विदुषी प्रो. वेदवती वैदिक (70) का नई दिल्ली में पिछले दिनों निधन हो गया।

वे प्रसिद्ध पत्रकार डॉ. वेदप्रताप वैदिक की धर्मपत्नी थीं। वे 1977 से दिल्ली के मैत्रेयी महाविद्यालय में अध्यापन, श्री अरविन्द महाविद्यालय (सांध्य) में संस्कृत विभागाध्यक्ष तथा इंण्डियन कौंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च की सीनियर फेलो रह 2013 में वे सेवानिवृत्त हुईं। उन्होंने श्वेताश्वतर उपनिषद के भाष्यों का एक अध्ययन' विषय पर 1977 में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। उपनिषद् विद्या पर उनके श्वेताश्वतर उपनिषद्: दार्शनिक अध्ययन, उपनिषदों के ऋषि, उपनिषद् वाड्मय: विविध आयाम, उपनिषदों के निर्वचन और उपनिषद्युगीन संस्कृति नामक ग्रंथ प्रकाशित हैं।

गीतकार मधुकर गौड़ नहीं रहे

गाते-गाते गीत मरूं मैं, मरते-मरते गाऊं।
तन को छोडूं भले धरा पर, गीत साथ ले जाऊं।।

ऐसे गीतों के रचयिता गीत-गंगा के भगीरथ एवं गीत-विधा के लिए प्राणप्रण से समर्पित मधुकर गौड़ (76) का 24 मार्च 2019 को निधन हो गया। वे ऐसे

संवेदनशील रचनाकार थे जो मूल्यों, आदर्शों, भावनाओं और मंगल की विधान की प्रेरणाओं से समस्त अवांछित अवरोधों को चुनौती देते हुए पांच दशकों से काव्य-साधना में रत थे। उनकी सृजनशीलता, मूल्यनिष्ठ काव्य-दृष्टि, निर्विकल्प समर्पणशीलता रचनाधर्मिता के प्रति लोकाभिमुखता, वस्तुनिष्ठ एवं अनाहत संकल्पशीलता, सामाजिक संयुक्ति और सम्पादन-कौशल-कला अद्वितीय थी। उन्होंने अपने जीवनकाल में लगभग 25 वर्षों तक गीत-मंचों द्वारा मुम्बई में जन-जन तक हिन्दी गीत को पहुंचाया। अपने जीवनकाल में उन्होंने हिन्दी एवं राजस्थानी की अनेक पुस्तकों का लेखन एवं सम्पादन भी किया।

खोज-खबर

संतां करो विचार....

कोयल नार तो नर कौन ?

महाकवि जयशंकर 'प्रसाद' ने 'अहा कौन है पंचम स्वर से कोकिल बोला' लिख दिया तो साहित्यकार, आलोचक उनके पीछे पड़ गए कि यह क्या कह दिया, कोयल तो नारी है, उसे पुरुषवाची नर कैसे कह दिया।

पंखेरुओं में अनेक मनुष्य के मित्र हैं। उनके सुख-दु:ख में साथ निभाने वाले हैं। इसीलिए मनुष्य कभी अकेला नहीं रहा। पक्षी जगत में बहुत से उसके साथ सहकर्मी, सहधर्मी, सहजीवनी, संजीवनी रहे हैं। विरहिणियों ने तो उनके बिना अपना जीवन ही व्यर्थ समझा। लोकजीवन में ऐसे वर्णन भरे पड़े हैं जब वे उनका सन्देशा प्रिय के पास ले जाते हैं। ऐसे पक्षियों में कोयलड़ी, हंस, तीतर, मोर, कबूतर, तोता, पपीहा, बगुला, कौआ अधिक उपयोगी और मुखर मुंह बोलते रहे हैं।

इन सबमें अपवाद रूप कोयल है जिसका कोई नर साथी नहीं है। पंचम स्वर में वह न जाने कबसे अपने पिव-पिउ को ढूंढ रही है। इसीलिए कहा गया है- 'पिउ-पिउ बोले कोयलिया।' अच्छी वाणी वाली नार भी इसीलिए कोकिल कण्ठी कही गई है।

कोयल की उपमा बालिकाओं के लिए बड़ी शोभती है। खासतौर पर विवाह के बाद विदा होती लड़की को गीत में कहा गया है-

वनड़ी थारा दादाजी बाग लगायो
थारे वनां सींचेळा कुण
म्हारा हरियावन री कोयळड़ी

तुम्हारे दादाजी ने, बाबोजी ने, काकोजी ने यह बाग लगाया, परिवार बसाया। उसमें तुम वृक्ष-पौधे जैसे बाल-बच्चे फल-फूल के रूप में हरियाली जन्य खुशियां भरे सुखदाता बने हुए हो। अब तुम विदा हो रही हो तो कौन केरी, आम्रफल खायेगा? नींबू चूसेगा? तुम बनड़ी सीताफल का बहु स्वाद कौन लेगा? यह बाग तुम्हारे बिना सूना हो जायेगा।

कोयल कौए से थोड़ी छोटी होती है। उसका शरीर काला पर पंख लाल और लाल ही चमकीली आंखें होती हैं। पांव भूरे सिलेटी रंग के होते हैं। उसकी मीठी-अमृतवाणी पूरे वनखण्ड को, जंगल को मंगल कर देती है। तब ही तो कहा है-

कोयळ बोल सुहावणा बोले इमरत बैण।
किण कारण काळी भई किण गुण राता नैण?

कोयल का दु:ख कोयल ही जानती है। उत्तर में कहती है-

बागां बनड़ां बावड्यां कठै न लाधा सैण।
तड़फ-तड़फ काळी भई रो-रो राता नैण।।

बाग-बगीचों, वनखण्डों, कुओं-बावड़ियों, सब तरफ ढूंढ-ढूंढ कर थकी-हारी तब भी प्रिय का पता नहीं लगा। उनकी ढूंढ-खोज की तड़फ में मेरा शरीर काला तथा आंसू बहाते-बहाते आंखें लाल हो गई हैं।

जैसे कोयल नाम ही विरह का प्रतीक हो गया है। महिलाएं करुण राग में जब कोयलड़ी गीत गाती हैं तो सुनने वाले फफक पड़ते हैं। उनका गला रूद्ध हो जाता है। आंखें समन्दर सा ओटा देने लगती हैं।

कहा जाता है, कोयल का पुरुष कागला है। उसी के संसर्ग से वह अण्डा देती है और उसी के घोंसले में उसका अण्डा पलता है। जब अण्डा फूटकर बच्चा बाहर आता है तब कौए-कौई को पता चलता है और कोयल का बच्चा पा कौई को अफसोस भी होता है। कोयल का बच्चा कोयल ही होता है। अपवाद रूप में ही कोई पुरुष बच्चा होता है। ऐसी स्थिति में वह पुरुषहीन-पुरुषत्वहीन ही जीवन जीने को बाध्य होता है। उसे न कोयल और न कौआ ही अपनी बिरादरी में स्थान देते हैं। ऐसे पुरुष-कोयल के पंखों पर लाल धब्बे होते हैं। कवियों ने कोयल की असली पहचान बसन्त ऋतु बताई है। इसी ऋतु में आम्र मौराता है तब कोयल का कण्ठ खुलता है और उसकी पिउ-पिउ की रट शुरू होती है। कहा भी है-

बसन्त काले समीपै काक: काक: पिक: पिक:।

पानी पर पत्थर की नाव

इसे आस्था का परम विश्वास ही कहें कि चित्तौड़गढ़ में चार छतरियों की बावड़ी में करीब दो क्विंटल पत्थर की नाव पानी में तैरी तो लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। 30 फरवरी 2006 को मैं भी इसका दर्शक-अध्येता बना। मंशा महादेव स्थल के भगतजी नन्दलाल माली का यह करतब पहले भी कई बार लोगों ने देखा। इस बार वहां बड़ोदिया महादेव संन्यास आश्रम के स्वामी धर्मानंदगिरि भी उपस्थित थे। छपरा में पं. रामचन्द्र तिवारी ने मंत्रोच्चार के साथ नाव की विधिपूर्वक पूजा की।

पानी के होज में लगभग चार घण्टे यह नाव तैरती रही। श्रद्धालुओं ने बताया कि भगतजी पिछले 24 वर्षों से अन्न ग्रहण नहीं कर रहे हैं। भगतजी ने बताया कि भगवान शिव की भक्ति व आस्था से रामायण काल से ही पत्थर की नाव तैरती रही है। तब तो रामजी के परस से शिला तक अहिल्या हो गई थी। भगतजी ने इधर की घटनाओं का जिक्र करते बताया कि सामन्तराज में बेगूं राजमहल में देवी-भक्त राव देवीसिंह ने सवा मण पत्थर की सिल्ली पानी में तैराई थी। वे राजकवि थे। उन्होंने इस चमत्कार का अपने काव्य में बखान किया था। वर्षों बाद वर्ष 2005 में बेगूं राव हरिसिंह ने किले के अन्दर पानी में सवा मण पत्थर की नाव तैराई।

भगतजी ने बताया कि पत्थर की नाव तैराने के इतिहास को जीवित रखने के लिए उन्होंने भगवान शिव की आराधना की और मनोरथ सिद्ध हो गया। नाव में कोटा स्टोन व सफेद मार्बल के लगभग 174 किलो पत्थर लगाए हैं। इसके अतिरिक्त 10-15 किलो की लोहे की फ्रेम है। छह फीट सात इंच लम्बी, 17 इंच ऊंची एवं 23 इंच चौड़ी नाव का कुल वजन लगभग दो क्विंटल है। नाव बनाने में भगतजी को सप्ताह भर लगा।

हकीकतकार विश्वेश्वरनाथ पुरोहित

राजमहलों की संस्कृति आम लोगों की संस्कृति से सर्वथा भिन्न रही है। वहां सारा काम बड़े अदब और सलीके से होता रहा। इसी संस्कृति के सम्बन्ध में जानने की जिज्ञासा होने पर 16 नवम्बर 1991 को प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ मुझे पुरोहित विश्वेश्वरनाथजी पुरोहित से मिलाने उनकी हवेली ले गए।

82 वर्षीय पुरोहितजी तब बीमार रहने लगे थे। उन्होंने बताया कि वे महाराणा फतहसिंहजी के जमाने से दरबार की चाकरी में रहे। उनके पूर्वज पृथ्वीराज चौहान के पुरोहित थे। उनका पुरोहित खानदान गुरु रामजी का वंशज है। उनकी तीस पीढ़ियां मेवाड़ महाराणा उदयसिंहजी के समय ये छड़ीदारों के दरोगा के रूप में अपनी सेवाएं देती आ रही हैं। महाराणा शम्भूसिंहजी के समय तथा अंग्रेजों की दखल शुरू हो गई तब इन्हें 'मास्टर ऑफ सेरेमनी' कहा जाने लगा।

पुरोहितजी ने बताया कि महाराणा की सारी दिनचर्या उनकी देखरेख में व्यतीत होती। वे ही उसके नियोजक, व्यवस्थापक और निर्देशक होते। सबकी खबरखोज और राजवंश की परम्परा-मर्यादा का रखरखाव उन्हीं के जिम्मे रहता। कहां किसकी बैठक, किसका कितना नजराणा-निछरावल होता, उसकी समग्र जानकारी उन्हें रहती।

राजप्रासाद की पूरी संस्कृति के वे चलते-फिरते जीवन्त इतिहास-कोश ही होते। यही नहीं, हर जगह उनकी बात ही नहीं, उनका सिक्का भी इतना चलता कि यदि महाराणा साहब का कोई आदेश भी परम्परानुसार नहीं होता तो वे उसे रोकने के जिम्मेदार होते। महाराणा को कभी शिकार का या अन्य कहीं बाहर पधारना होता तो पुरोहितजी को केवल संकेत कर देते तब पुरोहितजी सारी व्यवस्था का निर्देश देते। महाराणा का नोबती अर्थात् सवारी घोड़ा कौनसा होगा, उनके साथ कितने अन्य घोड़े और हाथी होंगे; साथ में कौन-कौन सा लवाजमा होगा, व्यवस्था में कौन-कौन रहेंगे; यह सारी व्यवस्था उनको करनी होती।

उन्होंने बताया कि महाराणा के घोड़े के आगे चोबदार चलते। जलेबदार घोड़े की जीण का कोना पकड़ घोड़े के पीछे-पीछे दौड़ते-चलते। घोड़ा ठीकड़िया पकड़ता। चरावदार बलाई होते। चाबुक सवार घोड़े फेरते। यात्रा के वक्त यदि दरबार का पहना कोई आभूषण आदि नीचे गिर जाता तो वह जलेबदार का होता। नजराणा में उमराव का पांच रूपया, सरदार का एक रूपया और पासवान्ये का एक रूपया होता। निछरावल उमराव की दो रूपया व सरदार की एक रूपया होती। एकबार भदेसर रावजी ने दो की बजाय पांच रूपये निछरावल दिये तो पुरोहितजी ने तीन रूपये अलग से पटक दिये।

एक महत्वपूर्ण घटना का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि महाराणा स्वरूपसिंहजी की पासवान ऐंजाबाई को एकलिंगजी के दर्शनार्थ उनके परदादा श्यामनाथजी ले गए। लौटते समय ऐंजाबाई को जल्दी थी अत: उन्होंने लारवालों को तेज चलने को कहा। इस पर श्यामनाथजी ने टोंकते हुए उन्हें तेज चलने की बजाय धीरे चलने को कहा। इस पर ऐंजाबाई सख्त नाराज हो गई। महाराणा को इसकी शिकायत हुई। श्यामनाथजी की पेशी पड़ी तब उन्होंने कहा, हुजुर-'उबड़-खाबड़ रास्ते में यदि कोई दुर्घटना घट जाती तो मेरी इज्जत मिट्टी में मिल जाती।' यह कहने के उपरान्त श्यामनाथजी ने महल जाना ही छोड़ दिया और छह माह के लिए वे जगदीशजी के दर्शनार्थ जगन्नाथपुरी चले गए। वहां पांच हजार रूपया जमा कराया जिसका अटका आज तक चला आ रहा है।

पुरोहितजी ने बताया कि उनके पास ऐसी कई घटनाओं की सुखद-दुखद स्मृतियां हैं। प्रतिदिन महाराणा की दिनचर्या की हकीकत लिखने का जिम्मा इन्हीं का रहता। इसलिए वे हकीकतकार के नाम से जाने जाते हैं। बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि वीर-विनोद भी ऐसी ही हकीकत है। उसे इतिहास ग्रन्थ कहना उचित नहीं है।

गड़बोर में पूजा कर पाण्डव हिमालय सिधारे

मेवाड़ के चार धामों में गड़बोर के चारभुजा की प्रसिद्ध धाम है जहां होली पर पन्द्रह दिन का ठठाठठ मेला भरता है। कहा जाता है कि पाण्डवों ने इस मूर्ति की पूजा की और जब वे हिमालय तपस्या हेतु गये तब इसे पानी में प्रवेश दे गए।

वर्षों बाद राजपूतों की बोराना जाति के प्रमुख गंगदेव, जयकालदेव, कालदेव आदि ने गड़बोर की नींव डाली। गड़ यानी गढ़ यानी किला और बोर यानी बोराना जाति। इन दोनों के कारण इसका नाम गड़बोर पड़ा। गंगदेव को जब सपना हुआ तो मूर्ति निकालकर स्थापना कराई गई। बाद में जब मारवाड़ के राजाओं से युद्ध हुआ तो गंगदेव आदि मारे गए।

यह भी कहा जाता है कि दुश्मनों से इस मूर्ति को बचाने हेतु बोराना ने ही जल प्रवेश करा दिया फिर जब नाथ गुसाई आए तो उन्होंने इसे निकाल विधिवत पूजा प्रारम्भ की। गूजर पुजारी तो यह मानते हैं कि यह मूर्ति कृष्ण ने सुदामा को पूजा हेतु दी। गड़बोर कोई सुरक्षित स्थल नहीं रहा। यहां छोटे-मोटे सवा सौ युद्ध हुए। मेवाड़ के महाराणाओं ने चारभुजा के मन्दिर की पूरी देखभाल की। महाराणा संग्रामसिंह, अरिसिंह, जवानसिंह, स्वरूपसिंह आदि ने पुजारियों को जागीरें तक भेंट की।

होली मेले में रात-रात भर यहां गैरों का आयोजन देखने मेलार्थी उमड़ पड़ते हैं। अपने हाथों में रंग-बिरंगी छड़ियां लिये अभिनेता-खेले फूले नहीं समाते हैं। होली के गीतों से सारा वातावरण फागुनी-बासन्ती माहौल में डूबा रसविभोर रहता है। यहां बालकों के झड़ूल्ये उतारे जाते हैं। जिनके बालक जीवित नहीं रहते वे यहां आकर मनौती पूरते हैं।

यहां के चारभुजानाथ बड़े चमत्कारी हैं। कई किस्से इन चमत्कारों के सुनने को मिलते हैं। मेवाड़ के महाराणा यहां जब भी दर्शनार्थ पधारते हैं, पुजारी उन्हें भगवान की धारण कराई माला देता है। एक दिन महाराणा देर से पधारे तो पुजारी ने भगवान को शयन करा प्रसादी माला खुद पहनली। इतने में महाराणा का पदार्पण हो गया तब पुजारी ने अपनी पहनी वह माला श्रीजी हुजूर को हाजिर कर दी। उस माला में पुजारी का एक श्वेत केश पाया गया। यह देख महाराणा ने पुजारी से पूछा- 'क्या प्रभु वृद्ध होने लगे हैं?'

इस पर पुजारी ने 'हां' कहा। दूसरे दिन पुजारी को भगवान के केश में एक श्वेत केश दिखाई दिया। जब उसे उखाड़ा गया तो श्रीविग्रह से रक्त की बूंद निकली। उस रात महाराणा को भगवान ने स्वप्न दिया कि भविष्य में कोई महाराणा मेरे दर्शन नहीं करे। तब से महाराणा बनने से पूर्व युवराज ही दर्शन को जाते हैं।

भगवान चारभुजानाथ अपने भोग में सुबह मक्खन, राजभोग में मीठे भात, दोपहर को कसार, शाम को दूध और रात्रि को मिश्री अरोगते हैं।

- डॉ. तुक्तक भानावत

शब्द रंजन
उदयपुर, सोमवार 15 अप्रेल 2019

सम्पादकीय

कुंवारों के विवाह में बाल बच्चों की मौज

भारतीय समाज में आदर्श गृहस्थी तथा आदर्श परिवार-समाज देखना हो तो आदिवासियों में चले जाइये। वहां उनके साथ रहकर कुछ दिन बिताएं और उनकी समाज-रचना, सामाजिक परिवेश, रीतिरिवाज, रहन-सहन के ढंग, परिवार बसाने के उपक्रम, आपसी हेलमेल, सौहार्द्र, सहकार, वैरभाव शमन करने के सरोकार, प्रकृति के अनन्य तादात्म्य और आस्था-विश्वास के सलीके से जीवन बसर करने का सबरंग जीवन जीकर अपने को धन्य करें। वहां कोई छोटा-बड़ा नहीं है। कोई अभाव नहीं है। सारे जन एक जैसे हैं। एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं और ग्यारह मिलकर एक होते हैं। वहां उनकी स्वयं की पंचायत, पंच परमेश्वर हैं।

उदयपुर के पास ही जो आदिवासी भील-गरासिया निवास करते हैं उन्हें ध्यान से देखने पर सबकुछ समझ में आ जायेगा। मेवाड़ का यह क्षेत्र आदिवासी बहुल है। यहां गुजरात की सीमा से सटे कोटड़ा के अनेक गांवों में चले जाइये। वहां सबसे बड़ा अचरज तो यही होगा कि सैकड़ों वर्षों से ये आदिवासी लिव-इन-रिलेशनशिप का बड़े बेहतरीन ढंग से पालन कर रहे हैं। मेलोंठेलों में जब गांव-के-गांव एकत्र होते हैं तो एक-दूसरे के मन मिल जाते हैं और वहीं से वे कूच कर जाते हैं। घरवालों को पता चलने पर उन्हें साथ-साथ रहने की स्वीकृति मिल जाती है। समाज का ठप्पा लग जाता है।

वे साथ-साथ रहते हैं। परिवार बसाते हैं और परिवार बढ़ाते हैं। जब उनकी संतान बड़ी हो जाती है तब उनका विवाह रचाया जाता है। इस वैवाहिक रस्म में उनके बच्चे बड़े ठाठबाट से भागीदार बनते हैं और खुशियां मनाते हैं। यह प्रथा 'दापा प्रथा' कहलाती है। ऐसा नहीं है कि गरीब परिवार ही यह रस्म निभाते हैं, जनप्रतिनिधि और सक्षम परिवारों में भी यह प्रथा समान रूप से देखने को मिलती है।

यही नहीं, आदिवासी गरासियों की आबू के आसपास के क्षेत्रों में घनी बस्ती है। वर्षों पूर्व उनके क्षेत्र में जाकर उनका खासा अध्ययन किया गया। उनका यह क्षेत्र ही कुंवारों के देश के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में सभी गरासिया कुंवारे रहकर भी लिव-इन-रिलेशन में रहकर शादीशुदा जीवन व्यतीत करते हैं। उनका परिवार बसता है और सभी आदर्श जीवन जीते हैं। इनसे संबंधित डॉ. महेंद्र भानावत ने एक पुस्तक भी लिखी जिसका नाम ही 'कुंवारे देश के आदिवासी' रखा गया। उनका देश भी 'कुंवारा देश' के नाम से जाना जाता है।

सच तो यह है कि आदिवासी ही सचमुच में प्रकृति की कृति हैं। वे कृति पुरुष हम सब लोग जो अपने को अति आधुनिक और विकास पुरुष समझते हैं, उनकी तुलना में तो विकृति पुरुष ही हैं।

जैसे मैं मोहनभाई से मिल रहा हूं

बच्चों का देश मासिक के सम्पादक संचय जैन को 29 मार्च 2019 को डॉ. महेन्द्र भानावत का लिखा गया पत्र

'बच्चों का देश' हो याकि 'अणुविभा समाचार' ; ये जब भी मिलते हैं, जैसे मैं मोहनभाई से मिल रहा हूं। अपने शरीर से अधिक ऊर्जा, उत्साह, कर्मशील चैतन्य और मित्रों से मैत्री का चरम उल्लास; ये सब मोहनभाई में जादुई ढंग से सदाबहार रहते। दिल की बात, कहनी अनकहनी को याराना के साथ बातपोशी करते मोहनभाई को अनेकबार रंगीले रईश बनते और फक्कड़ों के बीच चंगे-गंगे मनमौजी होते देखा। धुन के धनी मोहनभाई ने कभी न अपना और न दूसरों का रोना रोया। मेरी पोटली में उनकी बेमिसाल यादें हैं।

अणुविभा उनके जीवन-संचयन की शिखिरा थी। उसके माध्यम से जिस मनसा वाचा कर्मणा से आप मोहन-मंदिर की अखण्ड जोत जलाये रखने का ओपमाजनित विरल कार्य कर रहे हैं वह सर्वपकारेण अभिनंदनीय है।

उत्तर में अणुविभा (अणुव्रत विश्वभारती) तथा बच्चों का देश के संस्थापक स्मृतिशेष मोहन भाई के सुपुत्र संचय जैन ने 01 अप्रेल 2019 को लिखा-

आपका यह कहना मेरे लिए आशीर्वाद स्वरूप है कि बच्चों का देश और अणुविभा समाचार आपको मोहनभाई से मिलने का अवसर दे देते हैं। मेरे लिए भी अणुविभा उनसे मिलने का ही एक माध्यम है। वर्षों तक उनके साथ रहते हुए, उनके बनते-बिगड़ते सपनों की आंखमिचौली में शामिल होते हुए, मैं जितना उनको तब देख समझ पाया था, आज उसकी गहराई, ऊँचाई और विस्तार को और करीब से देख समझ पा रहा हूँ।

परिस्थितियों को मात देकर अपना रास्ता बना लेने और फिर से लक्ष्य की ओर बढ़ चलने का उनका जज्बा गजब का था लेकिन सब से अधिक मुझे बच्चों के प्रति उनकी सोच की गहनता प्रभावित करती है।

बिना किसी औपचारिक अध्ययन शिक्षण प्रशिक्षण के इतनी गहराई तक उतरना और फिर उसे जमीनी हकीकत में बदल डालना, मेरे लिए तो किसी आश्चर्य से कम नहीं है।

राजसमन्द के उनके सपने को अपना सपना मानकर उसे पूर्णता के करीब पहुँचाने का आत्मभाव लिए फिलहाल मैं सब कुछ छोड़छाड़ कर इसी प्रयास में लगा हूँ क्योंकि, मुझे यह अहसास हुआ कि मैंने यह नहीं किया तो वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में पिताजी का यह सपना उन ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच पाएगा जिसकी कल्पना वे करते थे बल्कि यह भी डर लगने लगा था धीरे-धीरे अणुविभा का यह भवन एक आत्मा विहीन ढांचा बन कर न रह जाए। इसे उस स्थिति में पहुँचाना चाहता हूँ जहाँ से पीछे मुड़ने की सम्भावना न हो।

हो सकता है यह मेरी आत्म-मुग्धता हो लेकिन जितना कुछ कर सकूं, ऐसा कर कम से कम मुझे आत्म-सन्तोष तो हो ही रहा है और सबसे महत्वपूर्ण यह कि आत्म-ग्लानि से तो बच ही रहा हूँ। सामाजिक धार्मिक विरोधाभासों से दूरी बनाए रख लक्ष्य की साधना में लगे रहना चाहता हूँ। आपका मार्गदर्शन, आशीर्वाद और आपकी प्रेरणा ताकत देते हैं।

डॉ. कर्णावट द्वारा शहीद-परिवार को 25 हजार की सहायता राशि भेंट

गांधी सेवा सदन, राजसमन्द के मन्त्री डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने बिनौल पहुंचकर अमर शहीद हवलदार नारायणलाल गुर्जर को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उनकी धर्मपत्नी मोहनीदेवी को सदन की ओर से 25 हजार रूपयों की सहायता राशि भेंट की।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हवलदार नारायणलाल ने राजसमन्द के इतिहास में एक गौरवशाली स्वर्ण पृष्ठ जोड़ा है।

राजसमन्द जिला निजी शिक्षण संस्थान समिति के सह संयोजक मुकेश वैष्णव तथा निदेशक प्रवीण गुर्जर ने शहीद-पुत्र मुकेश गुर्जर को निशु:ल्क शिक्षा देने की घोषणा की। इस अवसर पर चम्पालाल, प्रभुलाल भी उपस्थित थे।

प्रजनन की देवी 'बै' के गीत

-डॉ. मालती शर्मा-

ब्रज में 'बै' के गीत शिशु के मां की कोख से बाहर आ धरती छूते ही, उसके रोते ही गाये जाते हैं। शिशु यदि लड़का हो तो कांसे की थाली बजती है। लड़की होने पर कुछ गांवों में सूप बजाया जाता है।

थाली नहीं बजती किन्तु 'बै' के गीत लड़का हो या लड़की

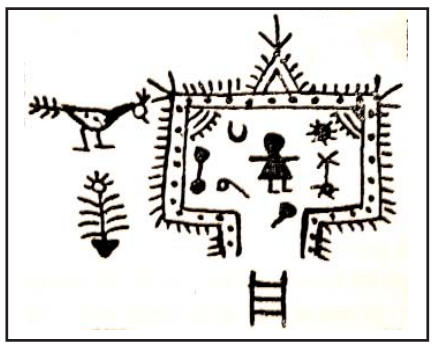

दोनों के जन्म पर गाये जाते हैं। बै के गीत और सार प्रसव पीड़ा के वक्त एकत्र आस-पड़ौस और घर की बड़ी-बूढ़ियां गाती हैं। गीतों के अन्त में मिठाई (गुड़) बांटती है। गीत है-

(1) च्यौं ठाड़ी री बै बाहिरी ?
तू तो दौरि कुम्हार के जाउरी
कुम्हारा कें ते माटी लाउरी च्यौं.
तू तो दौरि हमारे घर आउरी च्यौं.

अर्थात् - अरी बै ! तुम घर के बाहर क्यों खड़ी हो ? तुम जल्दी से कुम्हार के वहां जाओ। कुम्हार के वहां से मिट्टी लेकर तुम दौड़ कर हमारे यहां आओ। यों बाहर खड़ी क्यों हो ?

(2) बै गोड़े गिरारे कहां फिरै ?
तू तौ राम के मैहल आउ
हिरनी जौ चरै
तुम खोलो कौसिल्या फाटिक
तिहारी बै ठाड़ी दरबार
हिरनी.
बै ऊंचो सौ डारूंगी बैठनों
अरु लाट छोरि लागूंगी पांय
हिरनी
बै रीति री जइओ कुम्हार के
अरु भरीअ हमारे घर आउ हिरनी
बै हड़िया परें सर काइये
अरु करुए हमारे घर लाउ हिरनी

अर्थात् - हे बै माता ! तुम घर के चारों ओर और गांव की गलियों में क्यों घूम रही हो ? तुम तो राम (शिशु के पिता का नाम) के महलों में आओ। हिरनी जो चर रही है। हे दशरथ कौशल्या ! (घर के नाम) तुम घर का फाटक खोलो। देखो तुम्हारी बै तुम्हारे द्वार खड़ी है। बै ! तुम्हारे बैठने को मैं चौकी बिछाऊंगी। अपने केश फैलाकर तुम्हारे चरण छूऊंगी। बै ! खाली होने पर तुम कुम्हार के वहां जाओ। वहां से भरी-पूरी हो हमारे घर आओ। बै! हंडिया (मिट्टी की छोटी मटकी) तो तुम एक तरफ खिसका देना और भरे हुए करुवे (करकट टोंटी वाला कुल्हड़) हमारे घर ले आना।

(3) आउ बै लाउ बै
पइयां परति ऊं लीलरिया करतिऊं
पूत करै जनम बहू कौ आमनु
जो बै दैई तो पाइये

अर्थात् - हे बै! तुम हमारे घर आओ, आओ। मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूं। तुम्हारी कीर्ति गाती हूं। घर में पुत्र का जनम और बहू का आना बै की कृपा से ही होता है।

(4) पिछवार बिहाई च्यों खड़ी
तू तौ राम के मैहलनु आउ
बिहारी च्यों खड़ी
तो कूं ऊंचौ सो डासूंगी बैठनो
अरु दूध पखारूंगी पांय
बिहाई च्यों खड़ी
अरु लट छोरि लागूंगी पांय
बिहाई च्यों खड़ी

अर्थात् - हे बिहाई ! तुम घर के पिछवाड़े क्यों खड़ी हो ? तुम राम के महलों में आओ। तुम्हारे लिए मैं ऊंचा आसन बिछाऊंगी और दूध से तुम्हारे चरण धोऊंगी। अपने केश फैलाकर चरण स्पर्श कराऊंगी।

'वै', 'बै', 'वैमाता', 'बैहमाता', वीमाना मेरठ में या बिहाई-आगरा के वैश्यों में और मैनपुरी जिले में बिहाई कहते हैं- प्रजनन शक्ति की देवी है।

गीतों में यह सृष्टि निर्माता प्रजापति ब्रह्मा की शक्ति के रूप में दिखाई देती है। गांवों में कुम्हार को 'परजापति' कहा जाता है। विवाह में कुम्हार के चाक का पूजन होता है। गीतों में बै से रीती होने पर कुम्हार के वहां जाकर भरी-पूरी होकर भरे करुए लेकर घर में आने की प्रार्थना है। उसकी कृपा से ही घर में पुत्र होता है, बहू आती है।

वह बालक की भाग्य

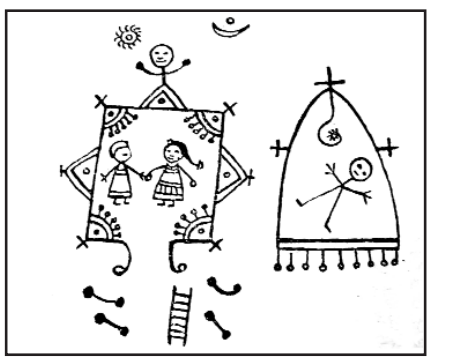

विधात्री उसकी रखवाली करने वाली माता है। छठी की रात को उसकी पूजा होती है। अबोध शिशु जब कभी स्वत: ही नींद में हंसता-रोता है, तो कहते हैं कि बैहमाता ही उसे हंसाती-रूलाती है।

स्मृतियों के शिखर (73) : डॉ. महेन्द्र भानावत

चुप रहने की सीख देती संताणी भूरीबाई

हमारे यहां लाली लुहारण, वाली भीलण, दुलू खटीकण, भूरी भंगण, लालां गूजरी जैसी नामी महिला भगतिन हुई हैं जिन्होंने भक्ति और समर्पण भाव के वशीभूत न केवल स्वयं का आत्मोद्धार किया अपितु कइयों को आत्मिक शांति, आनंद, सुख और सद्भाव की अनुभूति-भभूति दे सांसारिक उलझनों तथा ऊहापौहों से उभारा। नाथद्वारा की भूरीबाई सुथारण भी इन्हीं संत-भक्तों की एक सर्वश्रेष्ठ कड़ी थी जिनका 85 वर्ष की उम्र में देहावसान हुआ।

श्रीनाथजी की पावन नगरी नाथद्वारा में तेरह वर्ष की उम्र में भूरीबाई का विवाह करा दिया गया। वर फतहलालजी 43 बरस के थे। ऐसी स्थिति में उप कई प्रकार के दबाव बने। यातनाएं और लांछन झेले। नाता स्वीकार नहीं किया। कई प्रकार के दुखों ने उन्हें घेर लिया। आर्थिक तंगी तो इतनी घेरे रही कि उनका पेट पालना ही दूभर हो गया। तब भूरीबाई घोड़ों के लिए दाना दलतीं। मजूरी का पीसना करतीं। अन्य कठोर ऐसे कार्य करतीं, जिनसे केवल उनका गुजारा भर ही हो पाता।

इन्हीं दिनों भूरीबाई का सम्पर्क देवगढ़ की मुसलमान योगीनी भूरीबाई से हुआ। कहना नहीं होगा कि भूरीबाई पर, भूरीबाई का बड़ा रंग जमा और एक सम्बल भी मिला कि वह नितान्त अकेली नहीं है और दुख के दिन भी धीरे-धीरे काटने से कटते जायेंगे।

इस घटना के बाद नाथद्वारा में एक युवा संन्यासी आया, जिसकी वाणी का वहां के जनजीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। भूरीबाई भी उनके सम्पर्क में आई और साधनामूलक कई क्रियाएं सीखीं। अपनी साधना में किसी प्रकार की बाधा नहीं आ पाये और लोगों में भी उनका प्रचार-प्रसार नहीं हो, इस दृष्टि से भूरीबाई अपने घर के भीतर ही साधना में निरत रहतीं। यहां तक कि घर के बाहर ताला लगवाकर चाबी अपने पास रख लेतीं। ऐसे कभी सात-सात दिन भी साधना में व्यतीत हो जाते तब भूरीबाई की समाधि टूटती।

अन्यों में आमेट के राजपूत सन्त सरूपदास, सन्त योगीश्वरानन्द, चित्तौड़ के सूफी सन्त चलफिर शाह, कपासन के दीवान शाह आदि ऐसे सन्त थे जो भूरीबाई के निरन्तर सम्पर्क में रहे। एक महात्मा नारायण स्वामी थे जो बड़े कठोर तपस्वी थे।

वे शरीर पर केवल टाटपट्टी लगाये रहते थे और नारायण-नारायण का ही उच्चारण करते थे। वे भोजन भी थाल, पातल की बजाय अपने हाथ में ही करते। उन्होंने भूरीबाई को नारायण के दर्शन कराने को कहा, पर भूरीबाई ने बड़े सहज भाव से मना कर दिया। नारायण स्वामी भूरीबाई को अलख कहकर पुकारते थे। इनसे प्रभावित हो महाराज शिवदानसिंह चौहान ने नाथद्वारा में भूरीबाई के लिए अलख आश्रम बनाया।

भूरीबाई ने चार धाम की यात्रा की। तब इन धामों पर और रास्तों में भी कई नामीधारी सन्तों से उनकी भेंट हुई और सत्संग चर्चा रही। एकबार नाथद्वारा में सन्त माधवानन्दजी का आना हुआ। वे बड़े जाने-माने सन्त थे। नाथद्वारा का जन-जन उनके दर्शनों को उमड़ पड़ा। भूरीबाई ने भी उनके सम्बन्ध में कई अच्छी बातें सुनीं तो दर्शनों की इच्छा व्यक्त की। इस पर सन्त माधवानन्दजी बोले कि वे केवल पुरुषों से ही मिलते हैं, किसी महिला से वे नहीं मिलना चाहते। भूरीबाई को इस बात की सूचना दी गई तो उन्होंने नाराजगी प्रकट करते हुए यही कहा कि उन्हें किसने पैदा किया। माता ने या पिता ने?

भूरीबाई बहुत कम संभाषण करतीं। जो भी उनके पास पहुंचता, उसे चुप रहने को कहतीं। अपने घर में जहां उनकी बैठक थी, वहां तो उन्होंने चुप ही लिखवा दिया। केलवा के रामसिंहजी भूरीबाई के अच्छे संगेती थे। भूरीबाई ने उन्हें कई पत्र लिखे। बावजी चतरसिंहजी के देवलोक होने के पश्चात भूरीबाई कुछ समय केलवा भी रही।

भूरीबाई प्रतिदिन सुन्दरकाण्ड का पाठ करतीं। अपने घर आने वालों के लिए प्रतिदिन सुबह रामचरित्त मानस और भागवत का पाठ कराया जाता। भजन-कीर्तन होता। तीसरे प्रहर आने वालों को भूरीबाई अपने हाथों की बनी चाय पिलाती। भूरीबाई बड़ी दानी और दूसरों के दुख पर करुणा करने वाली थी। अपरिग्रही तो इतनी थी कि जो वस्तु वर्ष भर काम आती उसे अपने पास नहीं रख या तो किसी को दे देती या चुपचाप घर के बाहर छोड़ देती।

एकबार भूरीबाई कपासन दीवान शाह से मिलने गई। लौटते वक्त शाह ने भूरीबाई को सोने की मूठवाला अच्छा सा गेड़िया दिया। वह उसे नहीं लेना चाहती थी पर शाह को प्रेम लिहाज के खातिर कुछ कह नहीं पाई। कुछ समय बाद एक ब्राह्मण की लड़की का विवाह था। ब्राह्मण बहुत गरीब था। भूरीबाई को जब यह खबर लगी तो उस ब्राह्मण को बुलाकर वह गेड़िया दिया और कहा कि इसकी मूठ सोने की है सो बेचकर बेटी का ब्याह कर लेना। यही हुआ। ब्राह्मण सारी चिन्ताओं से मुक्त हो गया।

एकबार भूरीबाई के घर चोर आए। उनकी आहट से भूरीबाई की नींद खुल गई। इससे चोर भागते बने। सुबह भूरीबाई ने देखा कि चोर कुछ भी नहीं ले गए तो उन्हें बड़ा अफसोस हुआ। उन्होंने कहा कि चोरों ने पूरी रात काली की और बदले में कुछ नहीं मिला। इससे उनके बच्चे भूखे मर रहे होंगे। थोड़ा कुछ भी ले जाते तो घर में बाल-बच्चे तो सुखी रहते।

भूरीबाई ने उपदेश देने के खातिर कभी कुछ नहीं कहा। कभी कोई बात उनके मुंह से निकल गई तो उनके भक्तों ने उसे पकड़ ली। उन्होंने बातचीत में जो कुछ कहा, वह अपने अनुभव पर ही कहा। जप, तप, तीर्थ, पूजा, वेद, पुराणा सभी भूरीबाई की दृष्टि में वैसे ही हैं जैसे बच्चा अपनी छोटी उम्र में ढूली से खेलता हुआ उससे बातचीत करता है। उसे खिलाता-पिलाता है पर वह न तो बोलती है और न ही कुछ खाती-पीती है।

भूरीबाई के सम्पर्क में आचार्य रजनीश भी आये। उनके वहां जो भी पहुंचता, उनके हाथ का भोजन पाता। कहते हैं, भूरीबाई एकबार के भोजन में कइयों को तृप्त कर देतीं। वह अजवाइन मिले गेहूं के मोटे आटे की मोटी रोटी बनाती। मिर्च की चटनी और कढ़ी जीमने को देतीं। इसका स्वाद वर्षों तक बना रहता। यही नहीं उनके साथ कुत्ते, बिल्ली तथा अन्य पशु-पक्षियों का जमावड़ा भी निरन्तर बना रहता। वे सभी से बड़े स्नेह और आत्मीय प्रेम से रहती। यहां तक कि कुत्ते-बिल्ली तो उनकी गोद तक में आकर बैठ जाते।

भूरीबाई पर कई लोगों ने भजन लिखे। ये भजन रात्रि-जागरण के अवसर पर गाये जाते हैं। बस्ती-बस्ती मांगने वालों के मुख से भी ये भजन सुनने को मिलते हैं। एक भजन की प्रारम्भ की पंक्तियां हैं-

बाई थारा चरणां में चित्त लागो
यो तो भाग हमारो जागो।
जनम दिया जननी नहीं जाणूं
पङ्यो पालणे मांगो।
प्रेम करी माता पहने
कड़ा कंदोरा वागो।।

भूरीबाई के भक्तों में लक्ष्मीलालजी जोशी ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक बड़ी पुस्तक का प्रकाशन किया, जो बड़ी महत्वपूर्ण है। जोशीजी ने यह पुस्तक उनके जयपुर निवास पर मुझे भी भेंट की और बहुत सारी जानकारियों से समृद्ध ही नहीं किया, एकबार नाथद्वारा में भी उनसे भेंट करा दर्शल-लाभ भी कराये।

डिंगल-दोहाकार प्रो. देवकर्णसिंह ने भूरीबाई के अपने लम्बे परिचय के कई संस्मरण सुनाते हुए बताया कि वे अत्यंत शांतिप्रिय सहज महिला थीं जो आडम्बर से कोसों दूर थी। सारे घर का काम वह स्वयं करती थीं और जो लोग उनके दरसन करने जाते वे जितने आनंदित होते उतनी ही आनंदित भूरीबाई उन दर्शनार्थियों के दरसन कर होती थीं। भूरीबाई अपने साधारण से घर में कभी लगती ही नहीं थी कि वह कोई विशिष्ट महिला हैं। जो भी उनकी कुटिया पहुंचता वह पहले अपने हाथ की बनाई मोटी रोटी खिलातीं जो बड़ी स्वादिष्ट होती। लोगबाग कहते कि कुछ उपदेश दो, ज्ञान दो, आशीर्वाद दो तो वह यही कहतीं कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं है।

उदयपुर के संस्कृत के उद्भट विद्वान पं. शोभालाल दशोरा ने भूरीबाई को महाराज चतुरसिंहजी से मिलाया तब से भूरीबाई का साधना मार्ग और सुदृढ़ हुआ। बावजी चतुरसिंहजी का भूरीबाई पर इतना बड़ा असर पड़ा कि प्रति व्यास पूर्णिमा पर वह उनके चित्र की पूजा करतीं और भक्ति-भजन का आयोजन होता। भूरीबाई के दो ही दिखते हुए मंत्र, सिद्धांत अथवा गुरु थे - राम और चुप। ये दोनों जहां वे रहतीं वहां लिखे रहते। वे प्रायः चुप ही रहतीं। जो लोग उनके दर्शन करने जाते वे वहां सभी को चुप देखकर बड़े आश्चर्यचकित होते पर जो भी जाता एक विशेष आनंद की शांति की अनुभूति लेकर लौटता। भूरीबाई के कई भक्त-श्रद्धालु थे। नाथद्वारा में वे 'बाई' के नाम से जानी जाती थीं। वह बोलती नहीं थीं पर जब भी बोलतीं चुप रहने की बात कहती थीं।

एकबार कुछ श्रद्धालु भूरीबाई के दर्शनार्थ नाथद्वारा पहुंचे। उन्होंने भूरीबाई को प्रसाद स्वरूप कुछ कहने अथवा लिखने को कहा। इस पर भूरीबाई ने एक छोटी सी पुस्तिका तैयार की जिसमें काले चार पन्ने थे। उसके ऊपर एक सफेद कागज का एक कवर था जिस पर राम लिख वह पुस्तिका उन्हें दी और कहा कि इसमें मेरा सबकुछ समाविष्ट हो गया है।

जनकवि माधव दरक ने मुझे बताया कि डॉ. हरिसिंह चूण्डावत भूरीबाई के घनिष्ट-भक्त थे। इनसे मेरा भी अच्छा सम्पर्क रहा। उन्होंने 1984 में भूरीबाई की स्मृति में उदयपुर में अलख नयन मन्दिर की स्थापना की। उद्घाटन अवसर पर माधवजी से एक दोहा लिखवाकर शिलालेख पर उत्कीर्ण करवाया। वह दोहा था-

जहां अलख आशीष है,
नैत्र चिकित्सा धाम।
चूंडावत सेवा करे,
फलदाता श्री राम।।

इन्हीं चूण्डावतजी की सुपुत्री अलख नयन मन्दिर की व्यवस्थापिका डॉ. लक्ष्मी झाला ने बताया कि प्रतापगढ़ के एक वकील ने भूरीबाई को एक पोस्टकार्ड लिखकर जानना चाहा कि चुप रहने का उन्होंने जो संकेत किया उनसे तो चुप रहा नहीं जा रहा है, अतः अब क्या किया जाय? पोस्टकार्ड इस प्रकार था-

चुप सुणनैं जद चुप रह्यो,
अब चुप रह्यो न जाय।
मात बताओ बात या,
किण विध चुप व्हैवाय।।

इसका जवाब भूरीबाई ने केलवा ठाकुर रामसिंह से भिजवाया जो इस प्रकार था-

चुप कैवारी है नहीं,
चुप सुणवारी नाय।
चुप समझ्या री समझ है,
समझ्या चुप व्है जाय।।

अर्थात् चुप न कहने की न सुनने की है। यह तो समझे लोगों की समझ है। समझे लोग चुप हो जाते हैं।

डॉ. लक्ष्मी झाला का सर्वाधिक योगदान तो यही है कि उन्होंने भूरीबाई के जीवन-दर्शन को लेकर सहज साधना सन्त परम्परा के परिप्रेक्ष्य में मेवाड़ की महात्मा भूरीबाई का दार्शनिक विवेचन शीर्षक पर शोध कार्य कर पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

कहना नहीं होगा कि भूरीबाई ने लम्बी उम्र पाई। वि. सं. 1949 की आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को सुजानगढ़ में जनम लेकर संवत् 2036 की वैशाख शुक्ला सप्तमी को अपना शरीर छोड़ा।

राजमिस्त्रियों के लिए वर्कशॉप आयोजित

उदयपुर। अम्बुजा सीमेंट ने उदयपुर, जोधपुर, और कोटा के आसपास के छोटे-छोटे गांव में राजमिस्त्रियों को जागरूक करने हेतु वर्कशॉप का आयोजन किया। इन वर्कशॉप में कंपनी के प्रतिनिधी राजमिस्त्रियों को भवन निर्माण से संबंधित समस्याओं का भी निवारण करने में उनकी मदद करते है। प्रतिनिधि मौके पर जाकर राजमिस्त्रियों को किसी भी भवन निर्माण में सीमेंट के सही उपयोग की जानकारी और आधुनिक तकनीक के अनुभव से भी अवगत कराते है। इसके अलावा अम्बुजा सीमेंट द्वारा लॉन्च की गई नई प्रोडक्ट अम्बुजा रूफ स्पेशल की भी जानकारी इन वर्कशॉप द्वारा दी जा रही है। कम्पनी के रिजनल हेड मनोहर नाशीकर और जनरल मैनेजर (मार्केटिंग) रूपेन्द्र सिंह ने बताया कि गत वर्षों की अपार सफलता को देखते हुये कंपनी ने एक बार फिर से यह वर्कशॉप आरंभ की है ताकि ज्यादा से ज्यादा राजमिस्त्रियों को इसका लाभ मिल सके।

जगुआर लैंड रोवर इंडिया शुरू करेगा अपना विद्युतीकरण का सफर

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने भारत में अपने इलेक्ट्रिफाइड उत्पादों को लॉन्च करने का प्रस्ताव रखा है। वर्ष 2020 तक अपने समूचे प्रोडक्ट पोर्टफोलियो में इलेक्ट्रिफाइड विकल्पों की पेशकश करने की जगुआर लैंड रोवर की वैश्विक प्रतिबद्धता के अनुरूप, जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने 2019 की शुरूआत से ही अगले कुछ सालों में विभिन्न उत्पादों की पेशकश करने का प्रस्ताव रखा है। इनमें हाइब्रिड वाहनों से लेकर बैटरी इलेक्ट्रिक व्हीकल्स तक शामिल हैं।

रोहित सूरी, प्रेसिडेंट एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. ने कहा कि वर्ष 2019 के आखिर तक जगुआर लैंड रोवर द्वारा लैंड रोवर के इसके पहले हाइब्रिड वाहनों की पेशकश की जायेगी। वर्ष 2020 की दूसरी छमाही में, लैंड रोवर इंडिया की योजना इसके पहले बैटरी इलेक्ट्रिक व्हीकल, जगुआर आइ-पेस को लॉन्च करने की है।

उन्होंने कहा कि जगुआर लैंड रोवर का फोकस अधिक स्थायित्वपूर्ण भविष्य का निर्माण करने पर है और इंजीनियरों ने हमें इस रास्ते पर आगे बढ़ाने में मदद करने के लिये बिल्कुल सही उत्पादों को विकसित किया है। जगुआर लैंड रोवर इंडिया के पोर्टफोलियो में इलेक्ट्रिफाइड वाहनों की पेशकश इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर सरकार के झुकाव के अनुरूप है। कंपनी को भारत सरकार द्वारा फेम - दो की पेशकश और देश में चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के विस्तार पर फोकस द्वारा प्रोत्साहन मिला है। इससे निर्धारित समय में सभी प्रकार के इलेक्ट्रिक वाहनों को तेजी से अपनाने में मदद मिलेगी।

डॉ. धींग को जीतो सेवा सम्मान

जैनविद्या, साहित्य और शाकाहार प्रचार के क्षेत्र में उत्कृष्ट व सुदीर्घ सेवाओं के लिए डॉ. दिलीप धींग को तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित ने जीतो सेवा अवार्ड से सम्मानित किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि जैन समाज में आज भी कई भामाशाह हैं। वे स्वयं भी जैन हैं, क्योंकि वे पूर्ण शाकाहारी और व्यसनमुक्त हैं। उन्होंने जानकारी दी कि तमिलनाडु के राजभवन को पूर्ण शाकाहारी बना देने के बाद राजभवन का एक तिहाई खर्च कम हो गया है। उनकी नियुक्ति के बाद राजभवन में मेहमानों के लिए भी शाकाहार की व्यवस्था ही रहती है।

डॉ. कृष्णचंद चोरड़िया ने बताया कि समारोह में जीतो एपेक्स अध्यक्ष गणपतराज चौधरी, 'श्रमण आरोग्य' के अध्यक्ष हिमांशु शाह, चेन्नई चेप्टर के अध्यक्ष दौलत जैन, महासचिव निमिष टोलिया सहित जीतो के पदाधिकारी और विभिन्न क्षेत्रों के अनेक विशिष्टजन उपस्थित थे।

स्पोर्ट्स सप्ताह सम्पन्न

उदयपुर। साई तिरूपति विश्वविद्यालय, उमरड़ा के अन्तर्गत संचालित वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग एवं वेंकटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग में चल रहे स्पोर्ट्स सप्ताह का समापन शनिवार को हुआ। मुख्य अतिथि साई तिरूपति विश्वविद्यालय के चैयरमेन आशीष अग्रवाल एवं विशिष्ट अतिथि पीआईएमएस की डीन एवं प्रिंसिपल डॉ. चंद्रा माथुर ने विजेता टीमों को पुरस्कार प्रदान कर प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर आशीष अग्रवाल ने कहा कि पढ़ाई के समय छात्रों को दत्त-चित्त होकर पढ़ाई करनी चाहिए किंतु खेलते समय खेलने की भावना सर्वोपरि होना जरूरी है। इसीलिए कहा गया है- प्ले टू द गेम इन द स्पीरिट ऑफ द गेम। डॉ. चंद्रा माथुर ने कहा कि खेलों संबंधी जो भी आवश्यकता होगी उसमें हमारी ओर से कोई कमी नहीं आने दी जायेगी।

प्रधानाचार्य विजयसिंह रावत ने बताया कि स्पोर्ट्स सप्ताह के दौरान विभिन्न इनडोर व आउटडोर खेलों का आयोजन किया गया जिसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

शैल लुब्रिकेंट्स द्वारा नि:शुल्क नेत्र परीक्षण कैंप आयोजित

उदयपुर। शैल लुब्रिकेंट्स इंडिया ने दिल्ली-एनसीआर, बेंगलुरू, चेन्नई, अंबाला और जयपुर में ट्रांसपोर्ट नगर समेत पूरे देश के विभिन्न केंद्रों पर ट्रक चालकों, मैकेनिक्स और अन्य संबंधित ट्रांसपोर्ट कर्मचारियों के लिए नि:शुल्क नेत्र परीक्षण कैंपों का आयोजन शुरू किया। ऐसे कैंपों के आयोजन का विचार आंखों की अज्ञात बीमारियों और इलाज न मिलने के कारण बड़े पैमाने पर होने वाली सड़क दुर्घटनाओं को देखते हुए आया।

शैल लुब्रिकेंट्स, इंडिया की कंट्री हेड मानसी त्रिपाठी ने कहा कि इन कैंपों के माध्यम से शैल इस वर्ष अब तक 13,000 से अधिक नेत्र परीक्षण और 9,000 नि:शुल्क चश्मों का वितरण कर चुकी है। शैल लुब्रिकेंट्स में हम अपने सभी मूल्यवान साझेदारों को बेहतर और सुरक्षित ऑन रोड समाधान मुहैया कराने के प्रति प्रतिबद्ध हैं। यह नेत्र

परीक्षण कैंप पिछले वर्ष शुरू किए गए हमारे राष्ट्रीय स्वास्थ्य अभियान का दूसरा हिस्सा है। गत वर्ष हमने 31,000 जीवन को छुआ और इस वर्ष बड़े पैमाने पर लोगों तक यह मदद पहुंचाने की उम्मीद कर रहे हैं।

ट्रक चालकों और मैकेनिक्स दोनों के बीच इस प्रयास को शानदार प्रतिक्रिया मिली। मैकेनिक शिव शंकर ने कहा कि मैं पिछले पांच वर्षों से अपनी आंखों की समस्या से जूझ रहा था। मेरे लिए संदेश पढ़ना या मीटर देख पाना भी संभव नहीं रह गया था। आज मिले चश्मे की मदद से मैं एक बार फिर अच्छी तरह देख सकता हूं। ट्रक चालकों और मैकेनिक्स की जांच की गई और अपवर्तन संबंधी गड़बड़ियों, वर्णांधता और मोतियाबिंद जैसी आंखों की विभिन्न समस्याओं के लिए चिकित्सकीय सलाह दी गई। उपयुक्त जांच के बाद प्रतिभागियों को तत्काल ही नि:शुल्क चश्मे उपलब्ध कराए गए।

लैंड रोवर वेलार की बुकिंग शुरू

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने रेंज रोवर वेलार का स्थानीय रूप से उत्पादन आरंभ करने की घोषणा की। रेंज रोवर वेलार 2.0 लीटर पेट्रोल (184 किलोवॉट) और 2.0 लीटर डीजल (132 किलोवॉट) पावरट्रेन में उपलब्ध होगी। पूरे भारत में इसकी एक्स शोरूम कीमत 72.47 लाख रूपये रखी गई है।

जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. (जेएलआरआईएल) के प्रेसिडेंट और प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि हम अत्यधिक प्रतिस्पर्धी दामों पर ब्रिटिश डिजाइन, लग्जरी और टेक्नोलॉजी मुहैया कराने पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हमें पूरा विश्वास है कि रेंज रोवर के स्थानीय निर्माण से और भी लोग इस गाड़ी को पसंद करेंगे। लैंड रोवर वेलार का स्थानीय तौर पर उत्पादन भारतीय बाजार और हमारे ग्राहकों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।

मूल रूप से आर-डायनैमिक एस में उपलब्ध स्थानीय रूप से निर्मित यह रेंज रोवर वेलार कार प्रगतिशील डिजाइन, टेक्नोलॉजी और लक्जरी फीचर्स से लैस है। इनमें से कुछ फीचर्स में टच प्रो ड्यूओ, एक्टिवटी की, वाई-फाई और प्रो सर्विसेज, 380 किलोवॉट के मेरिडियन साउंड सिस्टम, फोर जोन क्लाइमेट कंट्रोल, केबिन एयर आयोनाइजेशन, प्रीमियम लेदर के इंटीरियर्स, 50.8 सेमी (20 इंच) के पहिए, फुल साइज स्पेयर व्हील्स, आर-डायनैमिक के शानदार पैक के साथ बेहतरीन बंपर डिजाइन, अनुकूल गति विज्ञान, प्रीमियम एलईडी हेडलाइट्स से पूरी तरह लैस है। इसके अलावा सिग्नेचर एलईडी डीआरएल, पार्क असिस्ट आदि की भी सुविधा है।

18 वाट 1 एम बैटन लॉन्च

उदयपुर। ल्यूमिनस पावर टेक्नोलॉजीज ने एलईडी लाइटिंग इंडस्ट्री में अपनी तरह का पहला 18 वाट 1 एम बैटन लॉन्च किया। यह प्रॉडक्ट आकार में एक मीटर (यानी 3.3 फीट) लंबा है और रेग्यूलर 4 फीट बैटन (यानी 1800 लुमेंस) जितनी चमक प्रदान करता है। यह प्रॉडक्ट देशभर में सौ से अधिक मार्केट में 299 रूपये में उपलब्ध है। ल्यूमिनस टेक्नोलॉजीज के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट जितेन्द्र अग्रवाल ने कहा कि कॉम्पैक्ट एलईडी ट्यूब लाइट से छोटी जगहों जैसे बेडरूम, रसोई, वॉशरूम, स्टडी रूम, स्टोर रूम आदि में रोशनी की सख्त जरूरत महसूस होती थी। क्योंकि एक सामान्य बल्ब की तुलना में एलईडी ट्यूब-लाइट (बैटन) का उपयोग करने से कमरे के अंदर रोशनी बेहतर फैलती है।

301 दिव्यांग कन्याओं का पूजन
बलिका के ऑपरेशन में ढाई लाख का सहयोग

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की ओर से दुर्गाष्टमी पर सेवा महातीर्थ बडी में 301 दिव्यांग कन्याओं का पूजन किया गया। निदेशक वंदना अग्रवाल ने वेदियों पर सभी कन्याओं के भाल पर तिलक लगाकर लाल चुनरी ओढ़ाई और हलवा-पुरी का नेवैद्य अर्पित किया साथ ही कंगन, माला, बिंदी आदि श्रृंगार-प्रसाधन सामग्री के साथ स्कूल ड्रैस, बैग, स्टेशनरी, पानी की बोटल, टिपिन, खिलौने आदि उपहार प्रदान किए गए।

अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि देश के विभिन्न राज्यों से आई इन कन्याओं के संस्थान में नवरात्रि के दौरान पोलियो करेक्शन के नि:शुल्क ऑपरेशन सम्पन्न हुए। कन्याओं के परिजनों ने कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा तथा बेटे-बेटी में भेदभाव जैसी कुरीतियों के विरोध में सक्रिय योगदान का संकल्प लिया।

संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' के अनुसार इस दौरान तीन माह की बच्ची दिशानी यादव के दिल में तीन छेद के ऑपरेशन के लिए संस्थान की ओर से 2 लाख 70 हजार रूपये का चैक भेंट किया गया। उल्लेखनीय है कि दिशानी के पिता लखन यादव मूलत: अलवर के हैं जो उदयपुर में कार्यरत हैं।

सपनों के सच हो जाने तक

कई सपने
बांध कर रखे हैं
जीवन की कुटिया में
रोशनी की छाँह तले
जिसमें संजो रखा था हौसला
नव उत्कर्ष के लिए
पानी के बुलबुलों -सी
उठती हैं छिटपुट स्मृतियां
क्या होगा कविताएं लिखकर
जिंदगी के अहम सवाल जब
शब्दों में ढलते ही नहीं
अक्षरों की कैद से
अर्थ कतराते हों जहाँ
उठो,
बंधे हुए सपनों को
आज़ाद हो जाने दो
मौसम को करवट लेने दो
मुरझाये चेहरों पर
सपनों के इंद्रधनुष तराशो
आशाओं का सूरज उग जाने तक
अतीत की वादियों में
भटकता हुआ
मौसम बेअसर
और उग आए हों पंख पैरों में
उम्मीदों के शिशु थामे हुए
चलते जाना है...चलते जाना है
सपनों के सच होने तक!

- राजकुमार जैन 'राजन'

कान्यो-मान्यो

मान्यो लायो कबाड़ी नै कैवतां

पैली कान्यो पोंच्यो हो मान्या पां नै दस कैवतां वनां सांस रोक्यां सुणावतो र्‌यो जदी अबकी दाण मान्यो ढूक्यो जो अठीं-वंठी पां-पड़ौस री लुगायां कनै बैठ जी कैवतां एकठी कीधी वी सुणायग्यौ। कान्यो सुण विचार में पड़ग्यो कै मान्यो घणो समझणो निकल्यो जो नैला माथै दैला ठोकग्यो। वींरी कैवता सुणो।

(1) असीक डाबी डब-डब करती म्हेलां चड़ी (ज्वार रो पैंकड़ो)
(2) काल्यो भील कळ कामड़ी खेले (पाणी खींचवा री चड़स)
(3) काल्यो भील भाला उजड़ियो (बोल्या रो रूंख)
(4) एक मनख अस्यो जो कमर बांध खेर री पाळी पे पड्‌यो (चारा रो पूळो)
(5) भैंस तो बंदी रै ने वानणी चरवा जा (काकड़ी ने वींरी वेळ)
(6) अठे नी, वठे नी, दल्ली रे दरवाजे नी, खाधा है पण तोड्‌या नी (घड़ा, ओला)
(7) काळी सी, कळगारी सी, काळा वन में रैती सी, लाल पाणी पाती सी, मरदां रा छोगा लेती सी (तलवार)
(8) ऊंचे सूं पड्‌यो गवळू रो बच्चो मुंडो लाल कळेजो काचो (जामुन)
(9) थूं वैतो तो म्हूं नी जाती (दीवा रो तेल ने बाती)
(10) छींट रो घाघरो, नानणी रो नेपो, आवो इलोजी उगाड़ ने देखो (रींगणो, बेंगण)
(11) काळी कांकर नीचे चार चोर बैठा (भैंस रा बोबा)
(12) चार खूंट चौबीस नगारा जींपे बैठा दो बणजारा (चांद, सूरज)
(13) चोर-चोर बारणूं आया, घर में ग्या ने एक वेइग्या (पान)
(14) अतरीक ना ऊंहूं (अमल)
(15) गरण गरण चाकर फरै ताके माथै परवता रूंड सूं माथो उतार दीधो (कुमार रो चाक ने घड़त)
(16) दो बैनां बचै एक मंगरो पण कदी नी मलै (आंख्यां वचै नाक)
(17) पग पातळा घर जाड़ा माथै गलाल, नर पैली नार बोले संतां करो वचार (सारस)
(18) अस्सी तोला रो सांकळो पड्‌यो बीच बजार (सांप)
(19) एक अचम्बो म्हैं सुण्यो मुरदो आटो खाय, वतळावे बोले नहीं मारे तो चिल्लाय (मृदंग)
(20) काळा कुवा को काळो पाणी हम काळा हुई जावां (जामुन)
(21) कीड़ी चाली सासरे नो मण मेंदी लगाय (दही बिलोने री मटकी)
(22) घाघरो ऊंको घेरदार, चोली ऊंकी तंग,सौला देवर छोड़नै गई जेठ के संग (अरहर री फली)
(23) जाजम वंछाई चंदण चोक में मांसूं समेटी ना जाय (धरती)
(24) जल भरी झारी म्हारे सिराणे पड़ी आखी-आखी रात म्हूं तो तिरस्यां मरी (अतर री शीशी)
(25) सोलै हाथ री साड़ी म्हारे सिराणे धरी, सारी-सारी रात म्हूं तो ठंड्‌यां मरी (जाजम)

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 100 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/
आदिवासी जीवनधारा	395/
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/
राजस्थान के लोकनृत्य	200/
गुजरात के लोकनृत्य	200/
राजस्थान के लोक देवी देवता	150/
भारतीय लोकमाध्यम	75/
अजूबा भारत	200/
पाबूजी की पड़	50/
लोककलाओं का आजादीकरण	250/
उदयपुर के आदिवासी	250/
निर्भय मीरां	250/
रंग रूड़ो राजस्थान	100/
कुंवारे देश के आदिवासी	100/
जन्हें मैं जानता हूं	100/
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/
राजस्थान के थापे	150/
कठपुतली	60/
जनजातियों में गाथा गायकी	350/

पत्र-पिटारी

15 फरवरी 2019 के शब्द रंजन में जितना कुछ डॉ. नरेन्द्र भानावत और डॉ. महेन्द्र भानावत की उपलब्धियों से प्रेरित होकर डॉ. संजीव भानावत ने जो ऊंचाइयां हासिल की हैं, वे सराहनीय हैं। वे न केवल उसकी योग्यता के परिचायक हैं वरन् उसके सौम्य स्वभाव को उजागर करती हैं। विदित हो कि नरेन्द्र मेरे सहपाठी ही नहीं रहे, उनके साथ मेरे घरेलू सम्बन्ध रहे हैं। इन सम्बन्धों को आप सब परिवार के सदस्यों ने बरकरार रखा है।

मैं जब पिछली बार जयपुर गया था, तब संजीव से मिलने गया था। संजीव ने नरेन्द्र की स्मृति में जो साहित्य इकट्ठा कर रखा है, वह नरेन्द्र की स्मृति को सदैव जीवन्त रखेगा। मुझे इतनी खुशी हुई, जिसकी कोई सीमा नहीं। इसी प्रकार जब मैं अपने परिवार के साथ उदयपुर आया था, तब तुक्तक मेरे से मिलने होटल में आए थे और फिर महेन्द्र से मिलने उसके कार्यालय गये थे। चर्चाओं में पुरानी यादें ताजा हो गई थीं।

इस बार के शब्द रंजन में जो संजीव का विवरण छपा है, वह तो पूरे परिवार की साहित्य के प्रति निष्ठा को उजागर करता है। मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। **- मनमोहन बागड़ी, मुंबई**

शब्द रंजन मुझे समय-समय पर मिल रहा है। यह पत्र लोक रंजन, ज्ञान रंजक, मेवाड़ का शान रंजक, इतिहास रंजक तथा आज की प्रासंगिक समस्याओं को उद्वेलित करने वाला मन रंजक ही नहीं, मनोरंजक भी है। आपके संस्मरण प्राचीन-अर्वाचीन दस्तावेज रंजक होने पर मैं हतप्रभ हूं। आप इसे अति रंजन न समझें।

शब्द रंजन में दी जाने वाली सामग्री बेजोड़ होती है। संजो कर रखने वाली सामग्री होती है। आने वाली पीढ़ी के शोध-छात्रों को इसमें अच्छी सामग्री मिलेगी। मुझे ताज्जुब होता है कि आप, बेटा और बेटी इतनी सामग्री कहां से बटोर लेते हो। **- हरमन चौहान, उदयपुर**

सम्प्रति के सौजन्य से, होली के हस्ताड़े।
बड़े नामी साहित्यकारों के, पोत दिये उघाड़े।।
कभी तूती बजती थी, बंधते नहीं अब नाड़े।
शेर चाहे बूढ़ा हो जाये, शिकार देख दहाड़े।।
कभी प्रताप था सूर्य सम, अब झेलते झाड़े।
शब्द रंजन धन्यवाद, याद हैं पहाड़े।।
सृजन में टांग खींच, एक-दूजे को पछाड़े।
भानावतजी बजा रहे, साहित्य के नगाड़े।।

- विनोद सोमानी 'हंस', अजमेर

पत्थर के घोड़ादेव

गरासियों में मिट्‌टी के घोड़ा बावसी की बड़ी मान्यता है। मन्नत पूरी होने पर लोग घोड़े चढ़ाते हैं। इसी प्रकार उदयपुर जिले की सराड़ा तहसील के कातनवाड़ा गांव में गोशाण बावजी का मन्दिर पत्थर के घोड़े और नंदी

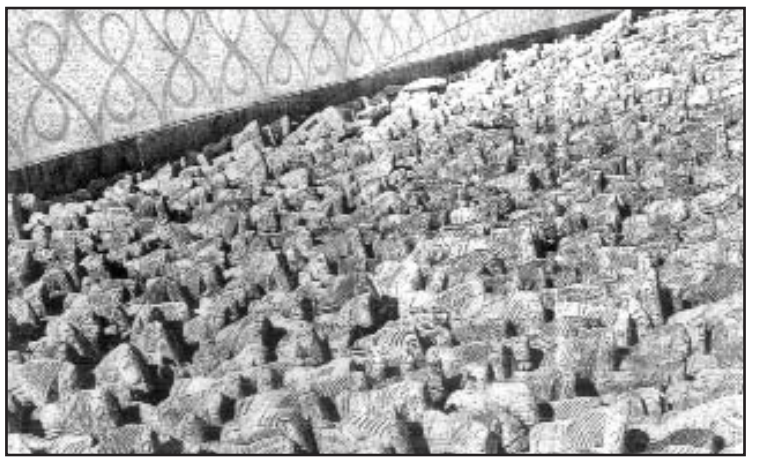

से अटा है। ये प्रतिमाएं उन सैकड़ों लोगों ने रखी हैं जिनकी संतान को लेकर मन्नत पूरी हुई थी। पशुओं के चोरी हो जाने, दूध नहीं देने जैसी समस्याओं पर ग्रामीण ऐसी मन्नत रखते हैं। जैसे पशुधन की रक्षा और उनके निरोग रहने के लिए देवनारायणजी, रामदेवजी, तेजाजी, जसनाथजी आदि लोकदेवताओं से प्रार्थना की जाती है वैसे ही गोशाण बावजी भी पशुपतिनाथ के रूप में माने और पूजे जाते हैं। जनश्रुति है कि बावजी ने पशुओं की रक्षा करते हुए अपना बलिदान दिया था। उनके घोड़े ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी इसलिए मन्नत पूरी होने पर घोड़े चढ़ाने की परंपरा चली आ रही है। यह स्थान मामादेव के नाम से भी जाना जाता है। इसे महा महादेव भी कहा जाता है। श्रद्धालु केसर चढ़ाकर शिव-पूजा करते हैं। यहां भादवी पंचमी के मेले में वागड़, खड्‌ग, मेवल-छप्पन क्षेत्र के श्रद्धालु पहुंचते हैं।

- मनोज व्यास

कहावतों के कहकहे (10)

(100) काबुल में कस्या गधा नी व्है
(101) कायथ, खत्री, कूकड़ा जात-जात नै पालै
(102) काल्या रै भड़ै धोल्यौ बंधै, रंग नी लै पण लखण तो लै
(103) काल कदी नी आवै
(104) काल कीने ई नी छोड़ै
(105) काली कीकी क्यूं करै

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

डॉ. भानावत बन्धु की जन्मस्थली कमनीय कानोड़

- भैरूसिंह राव 'क्रांति'-

महासिंह रण बांकुरे, कटे सीस कर वार।
रणबाजहु संहारियो, निज खाण्डे री धार।।
विजय मिली मेवाड़ ने, महासिंह रै प्राण।
दियौ मानं सारंग में, संग्राम महाराण।।
सत्रह सै ग्यारह मंह, तिथि अगस्त इकतीस।
पट्टो दियो कानोड़ हु, ल्हार गांव अड़तीस।।

वीर प्रसूता कानोड़ सोलह का ठिकाना रहा है। यहां के जागीरदार (सारंगदेवोत) महाराणा लाखा के पुत्र अज्जा के वंशज हैं। अज्जा का पुत्र सारंगदेवोत (प्रथम) बड़ा बहादुर था। उसने महाराणा रायमल के तृतीय पुत्र मेवाड़ के भावी महाराणा सांगा की उसके अग्रज पृथ्वीराज के आक्रमण से प्राण रक्षा की, परन्तु वह बाठेरड़ा के मन्दिर में पृथ्वीराज द्वारा छल से मारा गया।

संग्रामसिंह जब महाराणा बने, उन्होंने सारंगदेवोत की स्वामीभक्ति का स्मरण कर उसके उत्तराधिकारी जोगा को मेवल प्रदेश में जागीर दी तथा सारंगदेवोत के नाम को अमर करने के लिए आज्ञा दी कि आज से अज्जाजी के वंशज सारंगदेवोत कहलायेंगे।

अज्जाजी के नौवे वंशज महासिंह को अमरसिंह (द्वितीय 1072 ईस्वी) ने मेवाड़ क्षेत्र में लूट मचाने वाले लखू चणावदा के संहार पर खेमली-गुड़ली की जागीर दी। महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय 1690 ईस्वी) की ओर से मेवाड़ का मुगलों के साथ अन्तिम युद्ध लड़ते हुए महासिंह बांधनवाड़े के निकट 14 अप्रेल 1711 ईस्वी को खेत रहे। इनके धड़ ने एक ही वार में रणबाज खां का सिर अलग कर दिया।

महा नेत री भौमका, जाया सुत बेजोड़।
बलिदानां री माळ में दीधा माथा जोड़।।

महासिंह की नौ रानियां अपने शहीद स्वामी की पगड़ी के साथ सती हुई जिनका चबूतरा महासतियां, बड़ा राजपुरा में आज भी है। इसी से श्मशान स्थल महासतियां कहलाया। महासिंह के शहीद होने पर उनके ज्येष्ठ पुत्र सारंगदेव (द्वितीय)को 31 अगस्त 1711 ईस्वी को 38 गांव सहित कानोड़ की जागीर का पट्टा, जिसकी रेख टका 35400 व उपत 21850 रूपये प्रदान कर प्रथम श्रेणी का सामंत बनाया तथा रावत की पदवी दी।

इससे पूर्व कानोड़ ब्राह्मणों का माफी का गांव था। वीर प्रसूता कानोड़ के पूर्वजों में जोगा महाराणा सांगा व बाबर के युद्ध में नरबद गुजरात बहादुरशाह व विक्रमादित्य के बीच हुए युद्ध में रावत नेतसिंह हल्दीघाटी के युद्ध में शहीद हुए।

स्वातंत्र्य आंदोलन :

देश के स्वातंत्र्य आन्दोलन में कानोड़ ग्राम की महत्ती भूमिका रही। वीरभद्र जोशी ने उदयपुर में तत्कालीन हाईकोर्ट पर लगे उस समय की हुकूमत के झण्डे को उतार कर तिरंगा फहराया। इस पर उन्हें दो वर्ष जेल में व्यतीत करने पड़े।

अन्य 13 स्वतंत्रता सेनानियों में पं. उदय जैन, तखतमल बाबेल, सुखलाल उदावत, चान्दमल भानावत, सुजानमल मेहता, जवाहरलाल उदावत, भंवरलाल डूंगरवाल, सुखलाल रातड़िया, अम्बालाल नंदावत, मदनलाल बाबेल, माधवलाल नंदावत, मोतीलाल बाबेल व सवाईलाल कोठारी को छह माह की जेल हुई। इनमें अम्बालाल नंदावत अभी विद्यमान हैं।

वास्तु शिल्प :

कानोड़ के मध्य ऊंचाई पर निर्मित राजमहल में निर्मित नाहर निवास, केहर निवास एवं बाहू नव प्रासाद शिल्प की दृष्टि से भव्य, सुन्दर एवं बेजोड़ हैं। गांव के भीतर व बाहर विशाल सीढ़ियों से युक्त प्राचीन अंदर बाव, हलवेरा बाव, बाईजीराजजी की बाव, बाहरली बाव, झली बाव, प्रताप बाव, राठौड़जी की बाव, हालम बाव, नयी बाव आदि बावड़ियां तथा भव्य शीतला माता का कुण्ड है जो चारों ओर सीढ़ियां लिए हुए है। वास्तु शिल्प की दृष्टि से ये अनूठे-अद्वितीय हैं। पुरानी बस्ती शहर कोट से घिरी है जो अब ध्वस्त हो गई है।

सूरजपोल, कानोड़

चारों दिशाओं में सूरजपोल, चांदपोल, उदयपुर दरवाजा, भट्टजी का दरवाजा, रेगरों का दरवाजा आदि विशाल द्वार बने हुए थे। रात्रि में द्वार बन्द हो जाने पर आवागमन के लिए चार खिड़कियां थीं। आबादी वृद्धि के साथ अब बाहर नई बस्तियां बन गई हैं।

रसिक धरा :

रावत नाहरसिंह के समय में जानकीप्रसाद 'रसिक बिहारी' द्वारा राम रसायन महाकाव्य चैत्र शुक्ला तृतीय संवत् 1947 में रचा गया। महाकाव्य के अलावा इनके 26 और ग्रन्थ हैं। पुरातन साहित्यकारों, कवियों में कविभूषण राव नवल, नारायणसिंह राव, मुकुटेश्वर जोशी तथा अधुनातन साहित्यकारों, पं. उदय जैन, डॉ. नरेन्द्र भानावत, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. डूंगरसिंह पोखरना, डॉ. कनकमल उदावत, डॉ. शान्ता भानावत, राय जौरावरसिंह, राय गोवर्द्धनसिंह, शीलव्रत शर्मा, विपिन जारोली, भैरूसिंह राव 'क्रांति', जयसिंह चौहान 'जौहरी' आदि ख्यात नाम हैं।

पनवाड़ी री परवलां, अर कानोड़ी पान।
खोखा मीठा रस लियां, चाकू चढ़ियां साण।।

पान की खेती के लिए कानोड़ राजस्थान में ही नहीं, भारत भू पर ख्यात रहा है। यहां के पान दूर-दूर तक जाते रहे हैं। गांव के पास ही पूर्व में नागरवेल माता का मन्दिर है जो पान की खेती करने वाले तम्बोली समाज की आराध्य देवी है। पहले यहां अनेक पनवाड़ियां थीं परन्तु प्रकृति व भाग्य दोनों के रूष्ट हो जाने से सभी नष्ट हो गई। कुछ तम्बोली परिवार आज भी ताम्बुल व्यवसाय में लगे हुए हैं।

देशी, मीठा पत्ता व बंगाली पान की उपज के लिए यहां की मिट्टी तथा जलवायु बड़ी अनुकूल है। कानोड़ को पहचान देने में यहां के बने चाकू तथा शुद्ध देशी घी के खोखे (इमरती) का बड़ा नाम है। आगन्तुक दूर-दूर तक इन दोनों को ले जाते हुए नहीं चूकते हैं।

विद्या-स्थली :

कानोड़ विद्या-स्थली के रूप में अनुपम स्थान बनाये हुए है। श्री उदय जैन ने 24 अक्टूबर 1940 में जवाहर विद्यापीठ की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा नाम किया।

वर्तमान में कला महाविद्यालय एवं टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज जैसी प्रवृत्तियां संचालित हैं। उदय जैन के बाद नाथूलाल जैन और फिर सोहनलाल धींग तथा हिम्मत डूंगरवाल ने संचालक पद संभाला। सुन्दरलाल मुर्डिया ने छात्रावास के माध्यम से अनेक छात्रों का जीवन निर्माण किया। सर्वप्रथम डॉ. मोहनलाल मेहता ने काशी में उच्च शिक्षा ग्रहण कर अपनी और गांव की पहचान दी। माड़साब उमादत्तजी ने 05 अक्टूबर 1987 को शान्तिचन्द्र बाबेल के अथक प्रयत्न तथा समर्पण द्वारा तुलसी अमृत निकेतन संस्थान की स्थापना से द्रुत विकास हुआ। इसमें सवाईलाल पोखरना कई दृष्टियों से अर्थपक्ष प्रबल करने में मुख्य धुरी बने। वर्तामान में उत्साही युवक मनोज भानावत की देखरेख में संस्थान की कार्य प्रवृत्तियां बड़ी मुस्तेदी से चल रही है। यहां बालक-बालिकाओं के छात्रावास की भी सुविधाएं हैं।

इसके अलावा राजकीय विद्यालयों में चतुर उ.मा.वि., उग्रसेन कुमारी बालिका उ.मा.वि., उ.मा.वि. (बालक-बालिका) व प्राथमिक विद्यालय बालक-बालिका सहित अनेकों निजी विद्यालय हैं। यहां मुख्यत: राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र व उत्तरप्रदेश से आने वाले शिक्षार्थी शिक्षण व संस्कार का लाभ ले रहे हैं। बाहर से आने वालों में राजस्थान व मध्यप्रदेश की संख्या अधिक है।

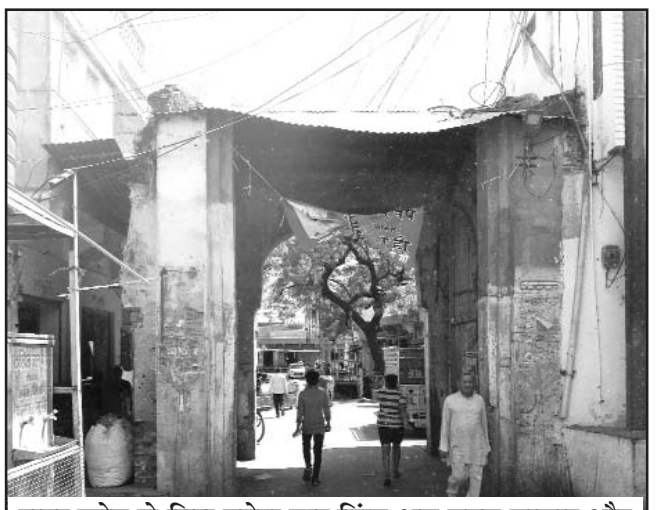

शहर कोट से घिरा प्रवेश द्वार किंतु अब मुख्य बाजार और उसकी रौनक बाहर की ओर अधिक दर्शनीय है। इसीलिए बाहर की यह बस्ती बारला सैर के नाम से जानी जाती है।

नामकरण :

कानोड़ गांव कानी नाम की मीणी ने बसाया था। ऐसी दन्त कथा है परन्तु इस सम्बन्ध में कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं हैं। कानोड़ की व्युत्पत्ति कान्ह, कान्हा से भी मानी जाती है। इसके प्रमाण में कृष्ण मन्दिरों की अधिकता का तथ्य प्रस्तुत किया जाता है।

- सभी फोटो अर्थांक भानावत

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।